International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor- 5.414, Volume 5, Issue 1, January 2018
Website- www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

"माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन"

शम्भु कुमार शर्मा
शोधार्थी, शिक्षा संकाय,
श्री सत्य साँई प्रौद्योगिकी एवं चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय, पचामा (सीहोर)

प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना है। इस हेतु न्यादर्श के रूप में 200 विद्यार्थियों {शहरी क्षेत्र के 100 (50 छात्र एवं 50 छात्राएँ) तथा ग्रामीण क्षेत्र के 100 (50 छात्र एवं 50 छात्राएँ)} का चयन कर उन पर डॉ. प्रवीण कुमार झा की 'पर्यावरण जागरूकता मापनी' का प्रशासन किया गया। प्राप्त परिणामों के अनुसार माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया जबकि छात्रा/विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर पाया गया तथा शहरी क्षेत्र की छात्रा/विद्यार्थियों में, ग्रामीण क्षेत्र की छात्रा/विद्यार्थियों की तुलना में पर्यावरण के प्रति बेहतर जागरूकता पाई गयी।

पर्यावरण ईश्वर द्वारा प्रदत्त एक अमूल्य उपहार है जो सम्पूर्ण मानव समाज का एकमात्र महत्वपूर्ण और अभिन्न अंग है। प्रकृति द्वारा प्रदत्त अमूल्य भौतिक तत्वों-पृथ्वी, जल, आकाश, वायु एवं अग्नि से मिलकर पर्यावरण का निर्माण हुआ है। ऐसा वैज्ञानिक भी मानते है कि स्वस्थ पर्यावरण से स्वस्थ सृष्टि का सृजन होता है। पर्यावरण स्वस्थ सृष्टि की क्रियाशीलता एवं विकासशीलता को गति प्रदान करता है। इसलिये आवश्यक हो जाता है कि पर्यावरण के प्रत्यक्ष एवं परोक्ष सभी घटकों को परिशुद्ध रखा जाये। मानव समाज जितना उत्तरोत्तर विकास के पथ पर आगे बढ़ रहा है। उसने उतना पर्यावरण के संरक्षण एवं संवर्धन पर ध्यान नहीं दिया। उसके परिणामस्वरूप आज मानव समाज के समक्ष अनेकानेक लाइलाज बीमारियां, भूकम्प, ज्वालामुखी, बाढ़ आदि जैसी भयावह परिस्थितियाँ उत्पन्न हो रही है तथा मानव की औसत आयु भी घट रही है। इन सबका मूल कारण मानव का पर्यावरण की मूल प्रकृति से विलग होना ही है। वर्तमान में मानव समाज के समक्ष प्रमुख चुनौती पर्यावरण का संरक्षण एवं संवर्धन करना है।

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Bibhutipur
Jhahuri, Samastipur

आज लगभग सभी लोग पर्यावरण के बारे में बातचीत करते है, लेकिन केवल कुछ ही लोग ऐसे है जिन्हें यह पता है कि क्या करने की आवश्यकता है तथा कुछ लोग ऐसे भी है जिनको अभी इस क्षेत्र में

Reg. No. 694/2009-10
Anukriti (An International Peer Reviewed Refereed Research Journal), Vol. 12, No. 5, May 2022

Impact Factor : 5.029
ISSN : 2250-1193

अनुक्रमणिका

1.	Centuries Old Vanishing: Indigenous Chitrakathi Pictorial Narrative Illustration Tradition of Maharashtra **Dr. Brijesh Swaroop Katiyar**	1-14
2.	प्राच्य वांगमय में राजधर्म एवं संस्थाओं का स्वरूप **डॉ0 सतेन्द्र कुमार पाण्डेय**	15-18
3.	विद्यालय और महाविद्यालय में किशोरावस्था के लड़कों और लड़कियों का समायोजन और शैक्षिक उपलब्धि **डॉ0 जुगनू कुमार**	19-22
4.	आधुनिक परिदृश्य में वायु प्रदूषण का महामारी प्रभाव और रोकथाम **डॉ0 शम्भू कुमार शर्मा**	23-26
5.	भारत छोड़ो आन्दोलन में बजीरगंज के स्वतंत्रता सेनानी **संदीप कुमार सिन्हा**	27-32

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Birsinghpur
Jhahuri, Samastipur

Reg. No. 694/2009-10
Anukriti (An International Peer Reviewed Refereed Research Journal), Vol. 12, No. 6, June 2022

Impact Factor : 5.029
ISSN : 2250-1193

आधुनिक परिदृश्य में वायु प्रदूषण का महामारी प्रभाव और रोकथाम

डॉ0 शम्भू कुमार शर्मा
सहायक प्रध्यापक (शिक्षा संकाय), सहायक शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालय, बीरसिंहपुर, समस्तीपुर (बिहार)

सार

वायु प्रदूषण एक प्रमुख स्वास्थ्य समस्या बनती जा रही है। जो दुनिया भर में लाखो लोगों को प्रभावित करती है। इस अवलोकन के समर्थन में, विश्व स्वास्थ्य संगठन का अनुमान है कि हर साल 2.4 मिलियन लोग स्वास्थ्य पर वायु प्रदूषण के प्रभाव के कारण मर जाते है। जैसा कि अमेरिका पर्यावरण संरक्षण एजेंसी द्वारा सुझाया गया है, डीजल इंजन प्रौद्योगिकी में परिवर्तन जैसी शमन रणनीतियों के परिणामस्वरूप अकाल मृत्यु दर कम हो सकती है। यह समीक्षा : (i) श्वसन रोग पर वायु प्रदूषण के प्रभाव पर चर्चा करती है। (ii) साक्ष्य प्रदान करता है कि वायु प्रदुषण को कम करने से बीमारी की रोकथाम पर सकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है और (iii) जब सरकारें वायु प्रदुषण को कम करने के लिए कदम उठाती है तो जनता के स्वास्थ्य पर समन्वित नितियों के प्रभाव को प्रदर्शित करता है।

कुंजी शब्द : वायु प्रदुषण, स्वास्थ्य, शिक्षा पर प्रभाव, रोकथाम, श्वसन रोग।

परिचय–

पर्यावरण प्रदुषण कई वर्षों से चिंता का विषय रहा है। मेलन इंस्टीटयुट ऑफ पिट्स बर्ग, पीए, यूएसए ने धूम्रपान उन्मूलन के पहले व्यापक वैज्ञानिक अध्ययन को प्रायोजित किया, जिसके परिणामस्वरूप धुएं के प्रभाव को कम करने के लिए कानून बनाया गया। यह अब अच्छी तरह से ज्ञात है कि पर्यावरण प्रदुषण स्वास्थ्य पर प्रभाव, विश्व स्वास्थ्य संगठन का अनुमान है कि हर साल 2.4 मिलियन लोग वायु प्रदुषण से जुड़े कारणों से मरते है। यह तेजी से मान्यता प्राप्त है कि प्रदुषण को कम करने के लिए रणनीतियों के कार्यान्वयन से पर्याप्त स्वास्थ्य लाभ हो सकते हैं।

उदाहरण के लिए, पर्यावरण संरक्षण एजेंसी ने प्रस्तावित किया कि डीजल इंजनो से उत्सर्जन को कम करने के उपायों के कार्यान्वयन से मृत्यु दर में 12,000 की कमी हो सकती है और संयुक्त राज्य अमेरिका में हर साल 15,000 दिन के दौरे और 8900 अस्पताल में भर्ती होने से रोका जा सकता है। इस समीक्षा का उद्देश्य है श्वसन स्वास्थ्य पर प्रदुषण के प्रभाव के बारे में जानकारी प्रदान करने के साथ–साथ कई नैदानिक रिपोर्टों में प्रस्तावित वायु प्रदुषण को कम करने के लिए रणनितियों पर चर्चा करने के लिए। **पार्टिकुलेट मैटर (पीएम) और ओजोन (ओ3) प्रदुषण समुदाय में चिंता के प्रमुख कारण हैं।**

पीएम हवा में निलंबित ठोस और तरल कणों का एक जटिल मिश्रण है जो कोयले, गैसोलीन, डीजल ईंधन और लकड़ी को जलाने पर वातावरण में छोड़ दिया जाता है। यह पर्यावरण में होने वाले नाट्रोजन ऑक्साइड और कार्बनिक यौगिकों की रासायनिक प्रतिक्रियाओं द्वारा भी निर्मित होता है। वनस्पति और पशुधन भी पीएम के स्रोत हैं। बड़े शहरों में, पीएम के उत्पादन को श्रेय कारों, ट्रकों और कोयले से चलने वाले बिजली संयंत्रों को दिया जाता है।

पीएम का स्वास्थ्य प्रभाव कई कारकों पर निर्भर करता है, जिसमें कणों का आकार और संरचना, जोखिम का स्तर और अवधि, और संपर्क में आने वाले व्यक्ति का लिंग, आयु और संवेदनशीलता शामिल है। जोखिम के लक्षणों में लगातार खांसी, गले में खराश, आंखो में जलन और सीने में जकड़न शामिल हो सकते हैं। पीएम भी अस्थमा को ट्रिगर कर सकता है या समय से पहले मौत का कारण बन सकता है, विशेष रूप से बुजुर्ग व्यक्तियों में पहले से मौजूद बीमारी के साथ। इसके अलावा, जो लोग बाहर सक्रिय हैं, वे उच्च जोखिम में हैं, क्योंकि शारीरिक गतिविधि से वायुमार्ग में पीएम की मात्रा बढ़ जाती है। रोग से ग्रस्त लोगों (जैसे मधुमेह मेलिटस, कुपोषण) में भी जोखिम बढ़ जाता है। रिस्तोव्स्की एट अल द्वारा डीजल पीएम पर एक व्यापक समीक्षा। वायु प्रदुषण और फेफड़ों की बीमारी से भी आकस्मिक घटना होती है।

ओजोन (O3)

O3 मुख्य रूप से नाइट्रोजन ऑक्साइड और कार्बनिक यौगिकों दोनो के साथ पराबैंगनी प्रकाश की परस्पर क्रिया से बनता है। O3 शक्तिशाली एंटी–ऑक्सीडेंट गुणों को प्रदर्शित करता है और वायु मार्ग में परिवर्तन को प्रेरित करता है जो एकाग्रता और जोखिम की अवधि पर निर्भर करता है।

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Birsinghpur
Jhahuri, Samastipur

Impact Factor : 5.029
ISSN : 2250-1193

श्वसन स्वास्थ्य पर प्रभाव

वायुमार्ग प्रदूषकों के लिए प्रवेश का एक बिंदु है, जो बदले में फेफड़ों की बीमारी का कारण बन सकता है। उदाहरण के लिए, पीएम को तीन श्वसन अंगों में से किसी मे जमा किया जा सकता है: **एक्सट्रैथोरेसिक, ट्रेकोब्रोनचियल** और **एल्वोलर** क्षेत्र। 9 पीएम > 10 मिमी व्यास (मोटे कण) एक्सट्रैथोरेसिक क्षेत्र में जमा होते हैं, पीएम 5 और 10 के बीच व्यास के साथ मिमी ट्रेकोब्रोनचियल क्षेत्र में जमा किया जाता है और कण < 2.5 मिमी व्यास (ठीक कण) वायुकोशीय क्षेत्र में जमा होते हैं। व्यास में 3 और 5 मिमी के बीच के कणों के लिए, कुल जमाव अंश अधिक होता है पुरुषों की तुलना में महिलाओं के लिए। 11 सबसे बड़ी चिंता के संभावित स्वास्थ्य प्रभाव उन कणों से जुड़े हैं जो ट्रेकोब्रोन्कियल और वायुकोशीय क्षेत्रों में प्रवेश करते है। स्वस्थ व्यक्तियों की तुलना में पहले से मौजुद श्वसन रोग वाले व्यक्तियों में जमाव दर भी बढ़ सकती है। यह सुझाव दिया गया है कि 0.1 मिमी व्यास वाले कण (अल्ट्राफाइन कण) बड़े क्षेत्र को कवर कर सकते है।

वायुकोशीय मैक्रोफेज द्वारा अति सूक्ष्म कण। हलांकि उनके छोटे आकार के कारण, अल्ट्राफाइन कण मैक्रोफेज फाइगोसाइटोसिस को अभिभूत करते हैं, जिसके परिणामस्वरूप पैठ में वृद्धि होती है, जो अन्य अंगो (जैसे मस्तिष्क, हृदय, अस्थि मज्जा, आदि) में हानिकारक प्रभाव का कारण बनता है। म्युकोसा से अक्षतंतु के माध्यम से मस्तिष्क के घ्राण बल्ब तक के कण। घर में आंतरित गतिविधियों जिसके परिणामस्वरूप कणों का निर्माण होता है, इसमें खाना पकाना (ओवन में, टोस्टिंग, फाइंग, बारबेक्यूइंग) सफाई (धूल झाड़ना, झाड़ू लगाना, वैक्यूम करना) शामिल हैं। आईएनजी) और लोगों की आवाजाही। ओजकायनाक एट अल। बताया गया है कि खाना पकाने के परिणामस्वरूप पीएम 10 का 4.1 1.6 मिलीग्राम/मिनट उत्पादन होता है जिसमें सूक्ष्म अंश कुल पीएम का योगदान देता है। एक बार जब पीएम शरीर में प्रवेश करता है तो यह विभिन्न अंग प्रणालियों को प्रभावित करता है।

एलर्जी रोग

बच्चों और युवा वयस्कों में अस्थना और एलर्जिक राइनाइटिंग जैसी एलर्जी संबंधी बीमारियाँ बहुत आम हैं। ज्यादातर मामलो में रोगियों के इन समूहों में अस्थमा आम एलर्जी के खिलाफ इम्युनोग्लोबुलिन ई क बढ़ते संश्लेषण की विशेषता है। इन रोगियों के पराग जैसे विशिष्ट एरोएलर्जेस के संपर्क मे आने से प्रतिरक्षा संबंधी परिवर्तनों की एक श्रृंखला होती है, जो अस्थमा के लक्षणों मे परिणत होती है। यह अब अच्छी तरह से स्थापित है कि बढ़ा हुआ वायु प्रदुषण पराग उत्पादन को प्रभावित करता है, जो बदले में एलर्जी संबंधी अस्थमा की व्यापकता और गंभीरता पर नकरात्मक प्रभाव डालता है।

डीजल निकास में कई प्रदूषक और पॉलीसाइक्लिक एरोमैटिक हाइड्रोकार्बन होते हैं, जो एलर्जी के साथ तालमेल बनाकर एलर्जी और अस्थमा के लक्षणों को बढ़ाते हैं। मुराकाका एट अल द्वारा किए गए प्रायोगिक अध्ययन ने दिखाया कि डीजल निकास कण विशिष्ट एलेर्जेस(ओवलंब्यूमिन या जापानी देवदार पराग) के जवाब में एक सहायक फोरिम्युनोग्लोबू लिन ई उत्पादन के रूप में कार्य करते हैं। इसके अलावा, डीजल–एग्जॉस्ट पार्टिकल का सॉस लेना एक विशिष्ट अस्थमा फेनोटाइप की ओर जाता है जो फुफ्फुसीय सूजन और वायुमार्ग अतिसक्रियता की विशेषता है। यह प्रस्तावित किया गया है कि जब डीजल निकास कणों को मैक्रोफेज द्वारा घेर लिया जाता है, तो Th2 प्रकार की सूजन संबंधी प्रतिक्रिया प्रेरित होती है। जबकि डीजल निकास कण जो निगले नहीं जाते है वे Th1 प्रकार की ज्वलनशील प्रतिक्रिया उत्पन्न करते हैं वातावरण में उच्च कार्बन डाई ऑक्साइड सांद्रता ने रैगवीड पराग में एलर्जिनिक प्रोटीन एंब ए 1 के उत्पादन को बढ़ाया जबकि जिसका एट अल। दिखाया कि कार्बन डाई ऑक्साइड की उच्च सांद्रता ने रैगवीड पराग में एलिर्जिनिक प्रोटीन एंब ए 1 के उत्पादन को बढ़ाया जबकि जिसका एट एल। ने बताया शहरी स्थानों में जहां कार्बन डाइ आक्साइड की सांद्रता अधिक होती हैं।

रैगवीड ग्रामीण स्थानों की तुलना में अधिक मात्रा में पराग (जिसमें एंब एलर्जन होता है) पैदा करता है। पराग की बढ़ी हुई एलर्जी को एलर्जेन से भरे पराग मलबे और महीन कणों में निहित सुगंधित हाइड्रोकार्बन के बीच सहक्रियात्मक जुड़ाव द्वारा समझाया जा सकता है। दूसरी ओर यातायात से संबंधित प्रदूषक (नाइट्रोजन डाइऑक्साइड) एलर्जी पैदा करने वाले तत्वों की सघनता में वृद्धि के लिए अग्रणी। उदाहरण के लिए एक प्रमुख सड़क मार्ग के 400 मीटर के भीतर स्कूलों में जाने वाले डब बच्चों ने बाहरी एलर्जी के प्रति संवेदनशीलता में वृद्धि दिखाई, लक्षणों और यातायात संबंधी प्रदूषण के बीच संबंध था।

वायु प्रदुषण के रोकथाम

नैदानिक अध्ययन

यह सर्वविदित है कि प्रदुषण का स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव पडता है; इसलिए प्रदुषण में कमी का स्वास्थ्य पर सकरात्मक प्रभाव पड़ता है विशेष रूप से अतिसंवेदनशील व्यक्ति P.M. 2.5 सांद्रता में कमी के

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Birsinghpur
Jhahuri, Samastipur

बिहार के माध्यमिक विधालयों में निष्पादन निरंतर और व्यापक मूल्यांकन का अध्ययन

डॉ. पवन कुमार
सहायक प्रोफेसर, बी.एड. विभाग
संत पाल टिचर्स ट्रेनिंग कॉलेज बीरसिंहपुर समस्तीपुर
मिथिला यूनिवर्सिटी, दरभंगा

Registration No.: TMBU-ICSRD/MCS-TRD-130

सारांश

21वीं शताब्दी की वैश्विक अर्थव्यवस्था ऐसे वातावरण में उन्नति कर सकती है जो रचनात्मकता एवं काल्पनिकता, विवेचनात्मक सोच और समस्या के समाधान से संबंधित कौशल पर आधारित हो। अध्ययन मूल्यांकन तंत्र पर आधारित एक शैक्षिक वातावरण वाली कक्षा में ये सुनिश्चित किया जा सकता है कि शिक्षक और छात्र दोनों ही सीखने पर अपना ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। हमें क्या मूल्यांकन करना है इसमें सुधार किया जा सकता है। छात्र अपने अध्ययन में कितनी प्रगति कर रहे हैं और इसके साथ-साथ शिक्षा के संपूर्ण लक्ष्य को प्राप्त करने के मामले में व्यवस्था का निष्पादन कैसा है इसके लिए मूल्यांकन पर आधारित कक्षा के साथ व्यापक स्तर पर उपलब्धि सर्वेक्षण को जानने की भी आवश्यकता होती है। बिहार विद्यालय परीक्षा समिति द्वारा प्रस्विकृत माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालय स्थापित है। तीनों स्तर के शिक्षण संस्थान की संख्या 1000 से भी अधिक है। उपरोक्त कोटि के शिक्षण संस्थान वित्त रहित संस्थान की श्रेणी में थे। समय-समय पर, उनको वित्तीय सहायता देने की मांग होती रहती थी और साथ ही साथ जन प्रतिनिधियों के द्वारा भी इस प्रकार की मांग की जाती थी। राज्य सरकार ने, सम्यक विचारोपरांत, ऐसे संस्थानों को परफोर्मेंस वेस्ड अनुदान दिए जाने का नीतिगत फैसला लिया। अनुदान दिए जाने का आधार उन संस्थान से उत्तीर्ण विद्यार्थीयों की संख्या पर आधारित है। राज्य सरकार का यह भी फैसला है कि अनुदान की राशि से सर्वप्रथम शिक्षक एवं शिक्षेकत्तर कर्मियों को वेतन दिया जाए। इसलिए अब भारक संविधान के अनुच्छेद 162 के प्रदत्त शक्तियों को प्रयोग करते हुए राज्य, सरकार, बिहार एतद द्वारा, विश्वविद्यालयों से संबद्धता प्राप्त महाविद्यालय (इंटर स्तर सहित), बिहार विद्यालय परीक्षा समिति से प्रस्वि त इंटर महाविद्यालय (उच्च माध्यामिक विद्यालय), शिक्षा विभाग द्वारा प्रस्विकृतध्स्थापना अनुमित प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों, जो अनुदान प्राप्त करने की पात्रता रखते हैं, के प्रबंध समिति से संबंधित सभी विवादों और इन संस्थानों के शिक्षक/शिक्षकेत्तर कर्मचारियों की सेवा-शर्तों से संबंधित सभी विषयों और सम्बद्ध विषयों और इससे जुड़े अन्य सभी प्रकार के विवादों के निवारण एवं निराकरण हेतु, स्वतंत्र प्राधिकार के गठन एवं स्थापना, उसके कार्य संचालन एवं प्रक्रिया के अवधारणा हेतु नियमावली बनाती है।

St. Paul Teachers Training College
Birsinghpur
Jhahuri, Samastipur

[illegible] सी.आ. (2012)। [illegible] सोशल साइंस के इंटरनेशनल जर्नल (IJ[illegible]) [illegible] माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के अकादमिक प्रदर्शन पर प्रभाव।

[illegible], आर.सी. और [illegible], सी.आई. (2012)। कॉलेज गणित में अकादमिक उपलब्धि के भविष्यवक्ता के रूप में आयु और लिंग,

[illegible] नदी राज्य प्राकृतिक और एप्लाइड साइंसेज के एशियाई जर्नल 1(2) 121-126।

[illegible], आर.जी. और [illegible], ओ.पी. (2011)। कॉलेज के गणित और विज्ञान के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के भविष्यवक्ता के रूप में उम्र और लिंग। "शिक्षण सीखने और परिवर्तन पर अन्तर्राष्ट्रीय [illegible] शिक्षण और सीखने के लिए संस्था संघ (IATEL)"

आचार्य, पी.बी. और देशमुख, आर.एस. (2012)। माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का आत्म-सम्मान और अकादमिक उपलब्धि। इंटरनेशनल रेफर्ड रिसर्च जर्नल, वॉल्यूम III, अंक -29, 20-23।

[illegible], [illegible] एम., ओडुवार, ए. जी. एंड [illegible], ए.ए. (2011)। किसुमु जिला केन्या में माध्यमिक स्कूल के छात्रों के बीच स्कूल समायोजन, लिंग और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंध। जर्नल ऑफ [illegible] ट्रेंड्स इन एजुकेशनल रिसर्च एंड पॉलिसी स्टडीज (JETERAPS), 2(6), 493-497

[illegible], एस.पी. और कालिया, ए. (1986)। कम प्राप्त करने वाले किशोरों में उच्च अंतर के बीच समायोजन [illegible] शैक्षिक अनुसंधान और विस्तार के जर्नल। 23(3)।

[illegible], आई., जेब, ए., उल्लाह, एस. एंड अली, ए. (2013)। छात्रों के आत्म-सम्मान और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंध, जिला स्वाबी, केपीके, पाकिस्तान में सरकारी माध्यमिक विद्यालयों का एक मामला। [illegible] सामाजिक विज्ञान और शिक्षा के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, 1(2), 161-169।

PRINCIPAL
St. Paul Teachers Training College
[illegible]
Jhahuri, Samastipur

Journal of The Gujarat Research Society

Volume 21 Issue 14, December 2019

प्रशिक्षणऔरइसकेदृष्टिकोणकामानवसंसाधनविकासपर प्रभाव

PAWAN KUMAR

RESEARCH SCHOLAR OF SRI SATYA SAI UNIVERSISTY

Dr. Vandana Bhatnagar

RESEARCH SUPERVISOR OF SRI SATYA SAI UNIVERSITY

सारांश

मानव संसाधन विकास एक जन-उन्मुख अवधारणा है जो लोगों के कौशल, ज्ञान और क्षमताओं को विकसित करने पर केंद्रित है। मानव संसाधन विकास को संगठनात्मक स्तर और राष्ट्रीय स्तर पर भी लागू किया जा सकता है। विभिन्न लेखक अभी तक मानव संसाधन विकास की पूरी अवधारणा की कल्पना करने में पूरी तरह से सफल नहीं हुए हैं। उन्होंने अपने दृष्टिकोण से इस शब्द को इस तरह के कारण परिभाषित किया है कि यह एक हालिया अवधारणा है और इसलिए अभी भी अवधारणा के ग्रहण में है। आजीवन सीखने वैश्वीकरण के नजरिए के तहत एक महत्वपूर्ण विषय बन गया है, पूरी दुनिया एक "सीखने समाज" (गास, 1996) में विकसित होती है। कार्य संगठन इस सीखने वाले समाज में महत्वपूर्ण भागीदार बन रहे हैं, क्योंकि वे अपने कर्मचारियों को निरंतर सीखने के लिए अधिक से अधिक अवसर प्रदान करते हैं, उद्देश्य के साथ संगठनात्मक सीखने को पूरी तरह से अनुकूलित करने के लिए

(करेन एट अल।, 2001)

मुख्यशब्द: दृष्टिकोण, अवधारणा, मानव संसाधन विकास, सीखने समाज

प्रस्तावना

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Birsinghpur
Jhahuri, Samastipur

[illegible] International Research Journal
Peer Reviewed Multidisciplinary Indexed Journal
ISSN 2320-3714
Volume 1[illegible] Issue [illegible] [illegible] 2018 UGC Approval Number [illegible]

बिहार के माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि का अध्ययन

Pawan Kumar

Research Scholar of Sri Satya Sai Universisty

Dr. Vandana Bhatnagar

Research Supervisor of Sri Satya Sai University

सारांश

शिक्षा के प्रत्येक चरण के लिए प्रासंगिक ज्ञान के आधार के निर्माण के लिए प्रत्येक स्तर पर [illegible] शिक्षा [illegible] की एक [illegible] की आवश्यकता होती है। इसमें [illegible] से संबंधित विषयों से संबंधित सैद्धांतिक ज्ञान का [illegible] शामिल है। शिक्षक शिक्षा [illegible] शिक्षाशास्त्र, समाजशास्त्र और मनोविज्ञान के विषयों से प्राप्त करती है। ये विषय शिक्षक शिक्षा को बेहतर [illegible] और आवेदन के लिए आधार प्रदान करते हैं। दार्शनिक आधार छात्र शिक्षकों को [illegible] और आधुनिक दार्शनिक विचारों के विभिन्न विद्यालयों और शिक्षा पर दार्शनिक विचारों [illegible] के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। [illegible] और पाठ्यक्रम निर्माण और अनुशासन जैसे विभिन्न पहलुओं [illegible] शैक्षिक प्रणाली में समाज की भूमिका [illegible] शास्त्रीय आधार छात्र शिक्षकों को एक राष्ट्र और दुनिया की [illegible] और उसकी गतिशीलता को समझने में मदद करती है। [illegible] मनोवैज्ञानिक आधार [illegible] और अंतर्राष्ट्रीय दृश्यों [illegible] करते हैं। [illegible] मदद करता है [illegible] मनोवैज्ञानिक [illegible] में अंतर्दृष्टि विकसित करने में [illegible] और सीखने की स्थितियों को समझने में सक्षम [illegible] शिक्षण अनुभव प्रदान कर सकें। शिक्षक शिक्षा [illegible] (शिक्षण रणनीति)। [illegible] सामग्री और [illegible] शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में [illegible] शिक्षक [illegible] के लिए उपयोग किए जाने वाले [illegible] शिक्षक शिक्षकों की [illegible] से संबंधित है।

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
[illegible]
Jhahuri, Samastipur

Organised by:
K.N. Bakshi College of Education
Giridih (Jharkhand)

In Association with
Next World Development Society,
Dhanbad, Jharkhand

पर्यावरण संरक्षण में शिक्षक की बदलती भूमिका

Pawan Kumar
Research Scholar
Satya Sai University Bhopal

Registration No.: VBU-KVB/2020/016

सारांश

वायु, जल, भूमि वनस्पति पेड़ पौधे पशु, मानव, यह मिलकर पर्यावरण बनाते है। [illegible] कुछ इस प्रकार से [illegible] पशु-पक्षी और अन्य जीव और जीवाणु [illegible] रहा है। जिसको जितनी आवश्यकता है [illegible] कर लेती है। [illegible] अर्जित की सुख सुविधा [illegible] प्रकृति का सामान्य रूप [illegible] बांधो की योजना [illegible] परिवर्तन आने लगा। [illegible] जीवन के लिये आवश्यक है [illegible] भी छोटा एवं सरल रूप में [illegible] रूप धारण कर लेगी। [illegible] पिछले वर्ष उ. प्र. सरकार द्वारा [illegible] है। हमारा यदि यही [illegible] सिमटकर रह जायेगी। [illegible] दिन-प्रतिदिन बढ़ रहे प्रदूषण [illegible] किन कार्यों से पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है [illegible] का प्रबंधन करें [illegible] संरक्षण एवं प्रबंधन के [illegible] संवाहक (Messenger) एवं कार्य [illegible]

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Birsinghpur
Jhahuri, Samastipur

UGC Approved Journal No. 48416
Interdisciplinary Journal of Contemporary Research, Vol. 9, No. 11, November, 2022

Impact Factor : 6.0
ISSN : 2393-6358

अनुक्रमणिका

▸	'सर्वहारा का हित' में पं. मदन मोहन मालवीय **प्रो. (डॉ.) अमर ज्योति सिंह, प्रो. (डॉ.) अमर बहादुर सिंह एवं डॉ. अमरनाथ सिंह**	1-2
▸	A Study of Adjustment with School Environment in Students **Dr. Manoj Kumar Sharma**	3-5
▸	आर.टी.ई. 2009 के परिप्रेक्ष्य में बिहार के प्राथमिक विद्यालयों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा **अनामिका कुमारी एवं डॉ0 किरण कुमारी**	6-8
▸	मध्याह्न भोजन योजना : प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण में एक सार्थक पहल **डॉ० राज कुमार यादव एवं डॉ० पीयूष कान्ती**	9-12
▸	Tradition and the Individual Talent: Toni Morrison's Treatment of Myth and Folklore in *Tar Baby* **Dr. Nabarun Ghosh**	13-16
▸	What History Teacher Should Know and What Teachers' Entrance Test Measure **Dr. Kumar Ravi Ranjan**	17-20
▸	Impact of Demographic Factors on Green Products Purchase Behavior of Consumers during Post Pandemic Era in Ajmer Region **Dr. R.K. Nagarwal**	21-26
▸	Involvement of the League of Nations in Nation-State Building **Balawant Kumar Prajapati**	27-31
▸	अलङ्कार विमर्श: **जनार्दन भोइ**	32-34
▸	शिक्षा में युवाओं को वायु प्रदूषण के प्रति मनोवृत्ति का अध्ययन **डॉ0 शम्भु कुमार शर्मा**	35-36
▸	मृच्छकटिकम् में अन्धविश्वास शकुन विचार एवं ज्योतिष निष्ठा : एक विवेचन **कुसुम लता**	37-38
▸	महान रसद्रष्टा रसिक ध्रुवदास जी की बयालिस लीला में प्रेम विषयक नेम का निरूपण **रजनी डागर**	39-42

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Birsinghpur
Mahuri, Samastipur

UGC Approved Journal No. 48416
Interdisciplinary Journal of Contemporary Research, Vol. 9, No. 11, November, 2022

Impact Factor: 6.0
ISSN: 2393-8358

शिक्षा में युवाओं को वायु प्रदूषण के प्रति मनोवृत्ति का अध्ययन

डॉ0 शम्भु कुमार शर्मा
सहायक प्राध्यापक, शिक्षा संकाय, संतमाल शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय वीरसिंहपुर, जिला–समस्तीपुर

वैश्विक स्तर पर वायु प्रदूषण को एक सर्वव्यापी समस्या के रूप में स्वीकार किया गया है। Evans and Jacobes (1998) ने अपने सर्वेक्षण में देखा कि वायु प्रदूषण के कारण अमेरिका में स्वास्थ्य मद में लगभग 250 मिलियन डॉलर खर्च किया गया। वायु प्रदूषण वास्तव में विभिन्न प्रकार के विषाक्त, अभिकर्त्ताओं के सम्मिश्रण का परिणाम होता है, जिसके अंतर्गत ओजोन, सल्फर ऑक्साइड, नाइट्रोजन ऑक्साइड, कार्बन मोनोऑक्साइड आदि की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसके अतिरिक्त घर के भीतर निकलने वाले विभिन्न प्रदूषक तथा निर्माण कार्यों को भी वायु प्रदूषण का कारण माना गया है (NSA, 1981)।

प्रदूषणों का प्रत्यक्षी करण व्यक्ति की दैहिक तथा मनोवैज्ञानिक कारकों के साथ–साथ उसकी गंध विशेष पर निर्भर करता है। Evans तथा Jacobes (1981) के अनुसार व्यक्ति की जानकारी में परिवर्त्तन प्रदूषण के संपर्क के अतिरिक्त कई अन्य कारकों पर भी निर्भर करता है। उन्होंने पाया कि निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के व्यक्तियों में उच्च एवं मध्यम स्तर के व्यक्तियों की तुलना में वायु प्रदूषण की अपेक्षाकृत कम जानकारी होती है। Baker (1976) ने पाया कि दिन के विशेष समय तथा मौसम विशेष के कारण भी प्रदूषण का प्रत्यक्षीकरण प्रभावित होता है। De Groot (1967) ने पाया कि अधिकांश वयस्क सोचते हैं कि दूसरे व्यक्ति अधिक प्रदूषण फैला रहे है तथा यह भी सोचते हैं कि हमारा भौगोलिक क्षेत्र अन्य पड़ोसी क्षेत्रों से कम प्रदूषित है।

Venkatesh et.al (2018) ने अपने अध्ययन में पाया कि दक्षिणी दिल्ली के अधिकांश व्यक्ति सोचते हैं कि वर्त्तमान वायु की गुणवत्ता पिछले पाँच वर्षों की तुलना में खराब थी। महिलाओं की तुलना में पुरुषों ने वायु प्रदूषण का मूल्यांकण अधिक किया जबकि स्वास्थ्यजन्य समस्याएँ महिलाओं में अधिक पाई गई। Pandey (2021) ने संतालों पर किये गए अध्ययन में पाया कि संतालों की तुलना में गैर–संतालों में वायु प्रदूषण के प्रति जागरूकता अधिक थी। जिसका कारण शिक्षा है। अपने अध्ययन के आधार पर Pandey ने वायु प्रदूषण के प्रति जागरूकता तथा ज्ञान था।

भारत में वायु प्रदूषण के प्रति मनोवृति संबंधी अध्ययनों की रिक्तता है, विशेषकर युवाओं की। इसलिए प्रस्तुत अध्ययन की आवश्यकता महसूस की गई। इस अध्ययन का उद्देश्य शहरी एवं ग्रामीण शिक्षित युवाओं की वायु प्रदूषण के प्रति मनोवृत्ति का अध्ययन करना है।

परिकल्पना

साहित्य समीक्षा के आधार पर निम्न परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया–

- युवाओं की वायु प्रदूषण के प्रति मनोवृत्ति में सार्थक लिंग भेद परिलक्षित होगा।

शोध–प्रविधि

- **प्रतिशत :** सरल यादृच्छिक प्रतिचयन विधि से बिहार राज्य के एक जिले से 120 शिक्षित युवाओं का चयन किया गया। जिसमें से 60 ग्रामीण क्षेत्र से एवं 60 शहरी क्षेत्र से चयनित किए गए, जिसे पुनः लिंग के आधार पर बराबर–बराबर भागों में विभाजित किया गया। सभी युवा महाविद्यालयों में अध्ययनरत थे, जिनकी आयुसीमा 18 से 25 वर्ष थी।
- **उपकरण :** अध्ययन में शामिल प्रतिदर्शों से सूचना संकलन के लिए उपकरण के रूप में Manicam (1998) द्वारा विकसित वायु प्रदूषण मनोवृति मापनी का उपयोग किया गया। यह एक पाँच बिंदु रेटिंग मापनी है जिसमें कुल 30 एकांश है। इस मापनी पर संभावित उच्च प्राप्तांक 150 तथा निम्न प्राप्तांक 30 है। उच्च प्राप्तांक धनात्मक अनूकूल मनोवृत्ति का सूचक है। इसकी विश्वसनीयता .86 तथा .93 है।

परिणाम एवं उसकी विवेचना

शिक्षित युवाओं की वायु प्रदूषण के प्रति मनोवृत्ति मापन के संबंध में पहली परिकल्पना बनाई गई कि युवाओं की वायु प्रदूषण के प्रति मनोवृत्ति में क्षेत्रीय भिन्नता परिलक्षित होगा। सांख्यिकी विश्लेषण के आधार पर संबंधित परिणामों का तालिका सं. 1 में प्रस्तुत किया जा रहा है।

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Birsinghpur
Jhahuri, Samastipur

Impact Factor : 6.0
ISSN : 2393-8358

तालिका सं. 1 : युवाओं की वायु प्रदूषण के प्रति मनोवृत्ति प्राप्तांकों की क्षेत्रीय आधार पर तुलना

समूह	संख्या	माध्य	विवेचना	एस.डी.	टी	एफ
शहरी	60	114.60	मध्यम अनुकूल	12.14	7.39 (P<01)	0.075 (NS)
ग्रामीण	60	98.22	तटस्थ	12.15		

तालिका सं. 1 में दर्शाए गए परिणामों से स्पष्ट होता है कि शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्रों के शिक्षित युवा प्रदूषण के प्रति मनोवृत्ति में सार्थक भिन्नता रखते हैं (t=7.39/P<.01)। शहरी क्षेत्र के युवाओं में सार्थक रूप से अधिक अनुकूल मनोवृत्ति है। अतः पहली परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। प्रस्तुत अध्ययन की दूसरी परिकल्पना बनाई गई कि युवाओं की वायु प्रदूषण के प्रति मनोवृत्ति में सार्थक लिंगभेद परिलक्षित होगा। सांख्यिकी विश्लेषण के आधार पर संबंधित परिणाम को तालिका सं. 2 में दर्शाया जा रहा है।

समूह	संख्या	माध्य	विवेचना	एस.डी.	टी	एफ
महिलाएँ	60	109.62	मध्यम अनुकूल	12.59	2.33 (P<.05)	3.92(P <.01)
पुरूष	60	103.42	तटस्थ	16.08		

तालिका सं. 2 के सर्वेक्षण से स्पष्ट होता है कि महिलाओं में पुरूषों की अपेक्षा वायु प्रदूषण के प्रति अधिक अनुकूल मनोवृत्ति है। दोनों समूहों के बीच का अंतर सार्थक है (t=2.22/P<.05)। अतः कहा जा सकता है कि वायु प्रदूषण के प्रति अनुकूल या प्रतिकूल मनोवृत्ति के संदर्भ में लिंग एक सार्थक भूमिका निभाता है। Pandey (2021) ने भी संतालो पर किये गए अपने अध्ययन में वायु प्रदूषण के प्रति मनोवृत्ति एवं जागरूकता पर लिंगभेद का प्रभाव पाया।

निष्कर्ष

प्राप्त परिणाम एवं उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण युवाओं की अपेक्षा शहरी युवा वायु प्रदूषण के प्रति अधिक अनुकूल मनोवृत्ति रखते हैं। प्राप्त परिणाम से यह भी स्पष्ट होता है कि लिंगभेद का सार्थक प्रभाव वायु प्रदूषण के प्रति मनोवृत्ति निर्माण पर पड़ता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. बेकर, एम.एल. (1976). प्लानिंग फॉर एनवायरमेंटल इनडिसेज, ऑब्जर्वर ऐप्रेजल ऑफ एअर क्वालिटी, इन क्रैक. के.एच. जूब, इ.एच., परसिविंग एनवायरमेंटल क्वालिटी : रीसर्च एण्ड एप्लीकेशन्स, प्लेनम न्यूयार्क
2. डी यूट, आई. (1967). ट्रेंडस इन पब्लिक एटीच्यूडस टूवार्डस एअर पॉलूशनण जनरल ऑफ द एअर पॉलूशन कंट्रोल एसोसिएशन, वॉलूम 17, पेज 679–681
3. इवानस, जी.डब्लू. एण्ड जेकोब, एस.वी. (1981) एअर पॉलूशन एण्ड ह्यूमन बिहेवियर, जनरल ऑफ सोसल इशूज, वॉलयूम 37, पेज 95–125, (1998) मेनिकैम, एम.आर. मैनुअल ऑफ एअर पॉलूशन एटीच्यूडस स्केल, नेशनल साइकोलॉजीकल कॉरपोरेशन, आगरा.
4. एन.ए.एस.' नेशनल एकेडमी ऑफ साइंसेज (1986), नेशनल एकेडमी प्रेस, वाशिंगटन, डी.सी.
5. पाटे, लक्ष्मी (1921). एनवायरमेंटल अवारनेस एमोंग सैटल युथस इन इंडिया. एसोसिएशन ऑफ थर्ड वर्ल्ड स्टडीज साउथ एशिया चैप्टर (ATWS-SAC), वॉलूम. V (1), पेज 34–42
6. वेंकटेश, यू कुमार, एस., अपरनवि, पी., किशोर, जे., कुमार (2018), पब्लिक परसेप्शन सर्वे ऑन एअर पॉलूशन इन साउथ, इन्टरनेशनल जनरल ऑफ प्रीवेंटीव, क्यूरेटिव एण्ड कॉम्यूनिटी मेडिसिन, वॉलूम 4, (2), पेज 20–27

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Birsinghpur
Jhahuri, Samastipur

संबंध में जीवन प्रत्याशा में महत्वपूर्ण सुधार दिखाया संयुक्त राज्य में आयोजित किया गया था और सूक्ष्म कण सांद्रता और जीवन प्रत्याशा में कमी के बीच एक स्पष्ट संबंध दिखाया। स्विस वयस्कों के एक समूह अध्ययन में इस अवलोकन की पुष्टि की गई थी, जिसमें दिखाया गया था कि परिवेश पीएम 10 के स्तर में कमी श्वसन संबंधी लक्षणों में कमी जुड़ी थी। वायु प्रदुषण के स्तर में कमी कई तरहों से प्राप्त की जा सकती है, और सरकार एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है कुछ सबसे प्रदूषित देशों मे पीएम 10 का स्तर दिखाता है। उदाहरण के लिए, 2008 ओलंपिक खेलों के दौरान, चीनी सरकार वायु प्रदूषण को नियंत्रित करने में सक्षम थी। इसके परिणामस्वरूप खेलों के शुरू होने से पहले की तुलना में ओलंपिक के दौरान अस्थमा के लिए बाहा रोगी यात्राओं की औसत संख्या में 41.6% की कमी आई। बीजिंग ओलंपिक से पहले उसके दौरान और बाद में 36 चौथी कक्षा के बीजिंग के बच्चों के एक अलग अध्ययन से पता चला है कि आंशिक निकास नाइट्रिक ऑक्साइड (FeNO) का स्तर ओलंपिक की अवधि के दौरान काफी कम था और जोखिम के बाद पहले घंटों में 16.6% बढ़ गया था। यह सुझाव देते हुए कि तेजी से भड़काऊ परिवर्तन हुए। ग्रामीण मेक्सिको में ठीक से पकाए गए लकड़ी के जलने वाले खाना पकाने के चूल्हे बनाम खुली आग के एक यादृच्छिक परीक्षण ने 1 एस में मजबूर श्वसन मात्रा में अनुदैर्ध्य गिरावट में कमी और श्वसन लक्षणों में सुधार दिखाया जब उचित खाना पकाने चूल्हों का उपयोग किया गया। बेहतर खाना पकाने के चूल्हे का उपयोग भी कार्बन मोनो ऑक्साइड के जोखिम को आधा करने के लिए पाया गया है और इसके परिणामस्वरूप निमोनिया के निदान की दर कम हुई है। सबूत जमा हो रहे हैं कि ऑक्सीडेटिव तनाव में शामिल कई जीनों में बहुरूपता एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

जलवायु परिर्वतन शमन

जलवायु परिर्वतन O3 और P.M 2.5 सहित कुछ पर्यावरणीय प्रदूषकों के स्तर को बढ़ा सकता है। उदहारण के लिए, फोटोकैमिकल स्मॉग और O3 का निर्माण उच्च तापमान के साथ बढ़ता है। डोहर्टी एट अल। में मृत्यु दर पर गर्मी और O3 के बोझ की मात्रा निर्धारित की 2003, 2005 और 2006 के हीटवेव अवधियों के दौरान 15 यूके अभिसरण परिणामों ने संकेत दिया कि O3 के कारण होने वाली मौतों की संख्या गर्मी के कारण होने वाले मौतों की संख्या अधिक थी। इसके अलावा 2003 के गर्मीयों दौरान O3 की सांद्रता में काफी वृद्धि हुई, जो अधिकतम 100 ppb तक पहुंच गई जंगल की आग के कारण कणों की परिवेशों सांद्रता बढ़ सकती है जो शुष्क वातावरण और अल नीनो जैसे अन्य जलवायु संबंधी प्रभावों का परिणाम है। 1998 में इंडोनेशिया में, एक नीनो से जुड़ी जंगल की आग के परिणामस्वरूप दक्षिण पूर्व एशिया में लगभग 20 मिलियन लोग हानिकारक धुएं से उत्पन्न प्रदूषकों के संपर्क में आ गए। मासिक P.M 10 मान, जो आमतौर पर 30 और 50 mg/m3 के बीच उतार–चढ़ाव होता है, बढ़कर 80 के बीचा हो गया और सितम्बर अक्टुबर 1997 के दौरान 110 mg/m3। इस अवधि के दौरान चिकित्सा शिकायतों की घटनाओं में लगभग 16.6% की वृद्धि हुई।

नियोजित जलवायु–परिवर्तन शमन रणनीतियों में से कुछ में औद्योगिक प्रक्रियाओं और बिजली उत्पादन के लिए जीवाश्म ईंधन का अधिक कुशल उपयोग, नवीकरणीय ऊर्जा (सौर / पवन / तरंग ऊर्जा) पर स्विच करना, वाहनों की ईंधन दक्षता में वृद्धि, इमारतों के इन्सुलेशन में सुधार, वृद्धि शामिल है। नया वन, परमाणु ऊर्जा और कार्बन पृथक्करण। यह आम तौर पर स्वीकार किया जाता है कि इन सभी क्षेत्रों में किए गए प्रयासों से अधिक वार्मिंग को रोका जा सकेगा, लेकिन मौजूदा वार्मिंग को उल्टा नहीं किया जा सकेगा। बीजिंग ओलंपिक के दौरान किए गए परीक्षणों ने प्रदर्शित किया है कि इस तरह के परिवर्तनों का मानव स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव पड़ सकता है। एक साथ लिया गया, इन टिप्पणियों से पता चलता है कि वायु प्रदूषकों के स्तर को कम करने से स्वास्थ्य पर काफी प्रभाव पड़ेगा, विशेष रूप से श्वसन रोगों के स्वास्थ्य पर।

जलवायु परिवर्तन के अनुमानित स्वास्थ्य प्रभावों के लिए मुख्य सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रतिक्रियाएँ शमन और अनुकूलन एक प्रभावी जोखिम आदमी नहीं है, खराब वायु गुणवता के लिए एजमेंट रणनीति, क्योंकि O3 और अन्य वायु प्रदुषकों के लिए संवेदनशीलता कम करने के लिए शारीरिक तंत्र सीमित है। इसलिए यदि बेहतर मॉडलिंग प्रयोग जलवायु परिवर्तन के साथ उच्च O3 सांद्रता की भविष्यवाणी करना जारी रखते हैं, तो वर्तमान और भावी पीढ़ियों के स्वास्थ्य की रक्षा के लिए जीवाश्म ईंधन के जलने से होने वाले उत्सर्जन में तेजी से कमी की आवश्यकता है। साक्ष्य बताते हैं कि वर्तमान क्षोभमंडलीय O3 सांद्रता को कम करने से रूग्णता और मृत्यु दर में कमी आती है साथ ही चिकित्सा देखभाल की लागत में महत्वपूर्ण बचत होती है।

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Birsinghpur

Impact Factor : 5.029
ISSN : 2250-1193

निष्कर्ष

वायु प्रदूषण वर्तमान में लाखों लोगों के स्वास्थ्य को प्रभावित करता है। हमने सांस लेने की क्षमता में कमी वाले मजदूरों पर प्रदूषकों के प्रभाव के सबूत पेश किए है। उदाहरण के लिए O3 और PM अस्थमा के लक्षणों को ट्रिगर कर सकते हैं, या समय से पहले मृत्यु का कारण बन सकते है, विशेष रूप से पहले से मौजूद श्वसन या हृदय रोग वाले बुजुर्ग व्यक्तियों मे। इसके अलावा प्रदुषक एलर्जेनिक पराग कणों की रिहाई को बढ़ाते हैं, जिसके परिणामस्वरूप पराग–प्रेरित अस्थमा का प्रसार बढ़ जाता है। इस प्रकार, वायु प्रदुषण को कम करने की कारवाई का मामला भारी है और यह कारवाई कई रूप से ले सकती है। इनमें से कुछ में शहरी नियोजन, तकनीकी विकास (जैसे कम प्रदूषण पैदा करने वाले नए वाहनो का डिजाइन), और सरकारी स्तर पर नए कानूनों की शुरूआत शामिल है। यह अनुमान लगाया गया है कि ब्लैक कार्बन और O3 दोनों स्तरों को कम करने से 3 मिलियन से अधिक समय से पहले होने वाले मौतों को रोका जा सकेगा और फसल की पैदावार में सलाना लगभग 50 मिलियन टन की वृद्धि होगी। खाना पकाने के चूल्हों में सुधार से जलाऊ लकड़ी की मांग में भी कमी आएगी और विकासशील देशों में वनों की कटाई में कमी आएगी। इसी तरह लैटिन अमेरिका और एशिया के कुछ हिस्सों में उपयोग किए जाने वाले उन्नत ईंट भट्टों में पारंपरिक भट्टों द्वारा उपयोग किए जाने वाले ईंधन का 50% का उपयोग होता है।

यदि भारी यातायात वाले क्षेत्रों में वायु प्रदुषण के स्तर को कम कर दिया गया, तो अस्थमा और अन्य श्वसन रोगों की घटनाओं में काफी कमी आएगी। हालांकि यह आम तौर पर स्वीकार किया जाता है कि वायु प्रदुषण को कम करने के प्रयासों से पर्यावरण में होने वाले परिवर्तनों को रोका जा सकेगा, ये मौजूदा वार्मिंग को उलट नहीं पाएंगे। दिलचस्प बात यह है कि अध्ययनों की बढ़ती संख्या से पता चलता है कि कम एंटी–ऑक्सीडेंट स्तर वाले व्यक्तियों मे, वायु प्रदुषण की संवेदनशीलता को कम करने और स्वास्थ्य पर प्रदूषकों के प्रभाव को बेअसर करने के लिए एक वैकल्पिक रणनीति प्रदान करने के लिए आहार पूरक का उपयोग एक आशाजनक दृष्टिकोण के रूप में किया जा सकता है।

संदर्भ सूची :

1. एजी एन वायु प्रदूषण कर सकना मेठ सहायक। जे 1930 22:553-41
2. संयुक्त राज्य पर्यावरण संरक्षण एजेंसी अंतिम नियामक विश्लेषण: गैर-सड़क डीजल इंजन EPA420- R-04-007 मई 2004 ES-1 ES-10 से उत्सर्जन का नियंत्रण 1 मई 2012 को एक्सेस किया गया। URL से उपलब्ध: http://www.epa.gov/nonroad diesel / 2004/42004007.pdf
3. ओस्ट्रो बी. टोडियास ए. क्यूरोल एक्स एट अल दैनिक मृत्यु दर पर पार्टिकुलेट मैटर के स्रोतों का प्रभाव: बार्सिलोना, स्पेन का केस क्रॉसओवर अध्ययन वातावरण स्वास्थ्य परिप्रेक्ष्य 2011; 119 1781-71
4. कुंजली एन, टैग्गर आईबी वायु प्रदूषण फेफड़े से हृदय तक। स्विस मेह
5. कार्तिस्ले जे शार्प नेकां व्यायाम और बाहरी परिवेशी वायु प्रदूषण ब्र. जे स्पोर्ट्स मेड 2001: 35:214-221
6. प्रोस्ट- नशा एनएम पुरानी उम्र से संबंधित बीमारियां जोखिम कारक साझा करती हैं क्या ये फिजियोलॉजिकल तंत्र साझा करते हैं और यह क्यों मायने रखता है? स्विस मे सप्ताह 2010 140 डब्ल्यू 13072-130781
7. हिंड्स डब्ल्यूसी एरोसोल प्रौद्योगिकी एयरबोर्न कणों के गुण, व्यवहार और माप सुनिश्चित जॉन विली एंड संस, इंक. न्यूयॉर्क 1982 आईएसबीएन 0-471-08726-21
8. रिस्तोव्स्की जेडटी मिल्जेविक बी. सुरवरकी एनसी एट अल। डीजल पार्टिकुलेट मैटर का श्वसन स्वास्थ्य प्रभाव सम विज्ञान 2012; 17: 201-121 फेफड़े की गतिशीलता (टीजीएलडी) पर
9. टास्क ग्रुप मानव श्वसन पथ के आंतरिक डोसिमेट्री के लिए निक्षेपण और प्रतिधारण मॉडल स्वास्थ्य भौतिकी। 1966: 12:173-2071
10. त्रिपनैन एम. पेट्स डीवी, अल्वर्ट आई सॉस के कणों का जमाव, प्रतिधारण और निकासी ब्र. जे. इंड. मेड. 1980 37: 337-621

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Birsinghpur
Jhahuri, Samastipur

Educational management and Educational leadership

Syed Mohammad Tahseen Alam Quadri*

EDUCATIONAL MANAGEMENT: DEFINITION AND GENERAL CONCEPTS

The concept of management overlaps with other similar terms, leadership and administration. Management is famous and used for instance in Great Britain, Europe as well as Africa, on the other hand, the term administration is preferred in the United States, Canada, and Australia.

The concept of leadership is of tremendous interest in most countries in the developed World at the present times. Management refers to the set of actions and tasks in relevance to application of the highest order of organization and effectiveness to use resources within to achieve the objectives of the organization.

Educational management may even be considered a (logy) by itself when it comes to the management of educational organizations.In essence, educational management is all about factual application of management principles in education fields. In the words of Mr. Gerald Ngugi Kimani it is plain as observe that educational administration and management are two applied fields of study.

Educational management is an applied field of management. One can therefore deduce that educational management refers to the application of theory and practice of management to the field of education or educational Institutions. Educational administration is a process of acquiring and allocating resources for the achievement of predetermined educational goals.

FUNCTIONS OF EDUCATIONAL MANAGEMENT

The process of educational management consists of five basic functions; a manager uses these functions to achieve educational organization goals and objectives. Most of the authors agreed on the following five functions of the educational management:

- Planning
- organization
- directing
- coordination
- controlling
- evaluation

EDUCATIONAL MANAGEMENT HAS THREE MAJOR FIELD STUDY AREA, THEY ARE

- Human resource, through the student, the educational personnel, and the stakeholder and community as an education service user.
- Learning resource, such as tools through the planning which will be used as a media or curriculum.
- Facility and finance resource, as supporting factors which make the education held well.

*Assistant Professor, St. Paul Teachers' Training College, Birsinghpur, Samastipur, Bihar.

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Birsinghpur
Jhahuri, Samastipur

There are also peer mentoring programs designed specifically to bring under-represented populations in different ways

- **Resiliency:** Resilience is "the ability to withstand and rebound from disruptive life challenges" and has been found to be a very useful method when working with students of low socioeconomic backgrounds who often encounter crises or challenges and suffer specific traumas. Education and students' performance and achievement in school are directly affected by these challenges, so certain negative psychological and environmental situations that students from lower socioeconomic backgrounds disproportionately encounter provide a framework for explaining the achievement gap. Resiliency does not provide a solution to the struggles and trauma that these students are experiencing, but instead focuses on giving them the tools to adapt to these situations and respond to them in a way that avoids a negative outcome and enables them to emerge stronger and to learn from the experience.

REFERENCES

- Baron G 1980. Research in educational administration in Britain. In: Bush T, Glatter R, Goodey J & Riche s C (eds). Approaches to School Management, 3-26.
- Baron G & Taylor W 1969 (eds). Educational Administration and the Social Sciences. London: Athlone. Bassey M 1997. Annual expenditure on educational research in the UK. Research Intelligence, 71.
- Bassey M 1995. Creating Education Through Research. Newark: Kirklington Moor Press.
- Bates R 2006. Culture and leadership in educational management: a historical study of what might have been. Journal of Educational Management and History, 38:155-169.
- Best R, Ribbins P, Jarvis C & Oddy D 1983. Education and Care. London: Heinemann.
- Blackmore J 2006. 'Telling tales' about social justice and the study and practice of leadership in education: a feminist history. Journal of Educational Management and History, 38:185-201.
- Bourdieu 1990. In Other Words: Essays Towards a Reflexive Sociology. Trans. Matthew Adamson. Cambridge: Polity.
- Bottery M 2006. Conte xt in the study and practice of leadership in education: a historical perspective. Journal of Educational Management and History, 38:169-185. Burns J 1978. Leadership. New York: Harper and Row.
- Bush T 1 999. Introduction: setting the scene. In: Bush T, B ell L, Bolam R, G latter R & Ribbins P (eds). Educational Management: Redefining Theory, Policy and Practice. London: Sage, 1-13. Clark J 2003. Our Shadowed Present: Modernism, Postmodernism and History. London: Atlantic Books.
- Connell R 1995. Social Justice in Schooling. Sydney: Centre for Equity. Dahl R 1957. The concept of power. Behavioural Science, 11:201-215.
- Davis M 2006. Historics: Why History Dominates Society. Department of Education, Training and Youth Affairs 2000.
- Dewey J 1902.The Educational Situation.Chicago: Chicago University Press. English F 2006.Understanding leadership in education: life writing and its possibilities. Journal of Educational Management and History, 38:141-155. Falk 1980. The academic department and role conflict. Improving College and University Teaching, 27:2. Fitz J 1999. Reflection s on the field of educational management studies. Educational Management and Administration, 27:313-321.
- French J & Raven B 1959. The base s of social power. In: Cartwright D (ed.). Studies in Social Power. Michigan: Ann Arbor, 150-167.
- Glatter R 1972. Management Development for the Education Profession. London:
- Harrap. Glatter R 1980. Education 'policy' and 'management': one field or two? In: Bush T, Glatte r R, Goodey J & Riche s C (eds). Approaches to School Management, 26-39.

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Birsinghpur
Jhahuri, Samastipur

माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिरूचि का अध्ययन

मनोज कुमार*

सार-संक्षेप

शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके अध्ययन से मनुष्य पुनः जन्म लेता है और पूर्णता की ओर अग्रसर होता है। शिक्षा के द्वारा वह अपने चतुर्दिक वातावरण को भी परिष्कृत करता है तथा विश्व को रहने योग्य बनाता है। शिक्षा का सामाजिक–आर्थिक विकास और सतत मानव विकास की प्रक्रिया में बहुत महत्वपूर्ण योगदान है। इतना ही नहीं शिक्षा चरित्र निर्माण, मन को मजबूत करने और बुद्धि के विस्तार की एक प्रक्रिया है। यह एक गतिशील प्रक्रिया है जो जन्म से शुरू होती है तथा किसी राष्ट्र के विकास और समृद्धि के लिए सबसे महत्वपूर्ण तत्व है। शिक्षा अपने वास्तविक अर्थों में सत्य की खोज है। यह ज्ञान और ज्ञान के माध्यम से एक अन्तहीन यात्रा है। इस तरह की यात्रा मानवतावाद के विकास के नए रास्ते खोलती है। मनुष्य को मानवीय गरिमा के साथ जीने के लिए शिक्षा आवश्यक मानी जाती है। शिक्षा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों के विकास की एक सतत प्रक्रिया है जो प्राकृतिक, सामंजस्यपूर्ण और प्रगतिशील है। प्राचीन काल से ही शिक्षा को मूल्यों के संचरण और समाज के संचित ज्ञान के रूप में देखा जाता है। ऐसा कहा जाता है कि 21वीं शताब्दी में, नवाचार की प्रक्रिया के माध्यम से ज्ञान को धन और सामाजिक भलाई में बदलने की एक राष्ट्र की क्षमता उसके भविष्य का निर्धारण करने वाली है, तदनुसार 21वीं सदी को ज्ञान की सदी कहा जाता है। शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत शिक्षक ही एकमात्र वह व्यक्ति होता है जो बालकों के कौशल को पहचान कर उनकी छिपी हुई योग्यताओं को समाज के सामने लाने में सफलतम प्रयत्न करता है इसलिये शिक्षकों को विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। शिक्षण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से शिक्षक भावी शिक्षक के व्यक्तित्व के विकास का हर संभव प्रयास करते हैं। अतः शिक्षण व्यक्ति के विकास में तो सहायक है परन्तु प्रभावी शिक्षण इससे भी बढ़कर है।

परिचय

शिक्षा किसी भी आधुनिक, सभ्य, उन्नत और विकसित कहे जाने वाले समाज का अनिवार्य लक्षण है। इसके बिना प्रगति कभी भी पूर्ण और बहुआयामी नहीं हो सकती। एक शिक्षित व्यक्ति, समाज या राष्ट्र की प्रगति के दुर्गम पथ पर पर अनवरत् यात्रा कर पाने में समर्थ होता है। शिक्षा का संबंध सिर्फ साक्षरता से ही

*सहायक प्राध्यापक, संत पॉल टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, बीरसिंहपुर, समस्तीपुर।

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Birsinghpur
Jhahuri, Samastipur

नहीं है बल्कि शिक्षा चेतना और उत्तरदायित्व की भावना को जागृत करने वाला औजार भी है। शिक्षा विहीन समाज से विकसित राष्ट्र की कल्पना करना किसी भी देश या राष्ट्र के लिए संभव नहीं है। शिक्षित समाज ही राष्ट्र विकास की अवधारणा को साकार कर सकने में समर्थ होता है। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास हो पाना संभव है। यह शिक्षा ही है जो एक आम व्यक्ति को समाज में अलग एक विशिष्ट स्थान दिलवाने का सामर्थ्य रखती है तथा मानव व्यवहार परिष्कृत करती है। मानव स्वभाव से एक गतिशील प्राणी है। अतः मानव समाज कभी भी स्थिर नहीं रहता, उसमें सदैव परिवर्त्तन हुआ करता है। क्रिया और परिवर्त्तन सदैव उपस्थित सार्वभौम तथ्य है। यही कारण है कि मानव समाज में बराबर परिवर्त्तन होता रहता है। किसी भी देश का इतिहास एक जैसा नहीं रहा है। राज्य या राष्ट्र बनते–बिगड़ते रहते हैं क्योंकि नयी–नयी विचारधाराएँ अपनायी जाती है, पुरानी रूढ़ियाँ और परम्पराएँ टूटती रहती है। परिवर्त्तन जीवन का मूल मंत्र है, उसके बिना जीवन का अस्तित्व खतरे में पड़ने का भय रहता है। यह बात जीवन के व्यक्तिगत एवं सामाजिक दोनों पक्षों पर लागू होती है।

शिक्षा सामाजिक परिवर्त्तन का एक प्रमुख कारक है। यह विश्वास किया जाता है कि शिक्षा के द्वारा योग्य विशेषीकृत कार्यकर्त्ता तैयार किए जा सकेंगे जो उच्च स्तरीय शिक्षण संस्थाओं, औद्योगिक व्यापारिक प्रतिष्ठानों तथा अधिकारीतंत्र में कार्य कर सकेंगे, लोगों में नये सामाजिक मूल्य विकसित किये जा सकेंगे तथा उनको परम्परागत मूल्यों की जकड़ से बहुत अधिक छुटकारा दिलाना संभव होगा, लोगों के व्यक्तित्व में परानुभूति, गतिशीलता, प्रबुद्धता, वैज्ञानिकता, उच्च सहभागिता तथा अध्यवसाय की आधुनिक विशेषताएँ उत्पन्न की जा सकेंगी तथा पिछड़ेपन, संकुचितता तथा अज्ञान को नष्ट किया जा सकेगा। शिक्षा के द्वारा लोगों के सामान्य ज्ञान, जीवन स्तर, स्वच्छता, स्वास्थ्य और नव परिवर्त्तन के प्रति प्रेरणा अथवा जागरूकता के स्तरों को विकसित किया जा सकेगा तथा सामाजिक स्तरीकरण या विभेदीकरण या शोषण को कम किया जा सकेगा।

किसी भी देश की सफलता छात्रों के गुणों पर निर्भर करती है। भारत में अध्यापन और सीखने की गौरवशाली परंपरा रही है, जहाँ ज्ञान और मुक्ति के लिए और भौतिक लाभ के लिए शिक्षा दी जाती थी। ज्ञान को मनुष्य का सर्वोच्च गुण माना जाता है। प्लेटो ने इस बात पर जोर दिया कि कोई भी तथ्यात्मक जानकारी आम आदमी को तब तक शिक्षित व्यक्ति नहीं बना सकती जब तक कि उसमें कुछ जागृत न हो। शिक्षा को मन और आत्मा दोनों के प्रशिक्षण के रूप में माना जाता है। शिक्षा मुक्ति और आत्म–साक्षात्कार के लिए थी। समाज सेवा विद्वान का सबसे बड़ा विचार था। एक विद्वान ने सामाजिक में संतुष्टि प्राप्त की जिसने उसे उपलब्धि और उत्कृष्टता का आनंद दिया। शिक्षकों के वेतन के लिए कोई विशेष व्यवस्था नहीं थी। वे आमतौर पर अपनी व्यक्तिगत कमाई या गुरूदक्षिणा पर बनाए रखते थे। राजा गुरूकुल आश्रम के लिए भूमि प्रदान की लेकिन राजा की ओर से कोई हस्तक्षेप नहीं किया गया। शिक्षकों को पूर्ण स्वतंत्रता थी और वे समाज में सर्वोच्च सम्मान का आनंद लेते थे, जो उनके लिए सबसे बड़ी प्रेरणा और प्रोत्साहन था। शिक्षा कभी भी राजनीतिक सत्ता के अधीन नहीं रही। इस प्रकार प्राचीन काल में शिक्षा छात्रों को मूल्य प्रदान करने पर जोर देती थी। शिक्षण व्यक्तिगत था और छात्र शिक्षक के साथ घनिष्ठ संबंध में रहते थे। वे शिक्षक के मूल्यों को आत्मसात करते थे और उन्हें एक आदर्श मानते थे। शिक्षण को उच्च सम्मान में माना जाता था।

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Birsinghpur
Jhahuri, Samastipur

किसी भी राष्ट्र अथवा समाज के विकास का सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन मानव है। कोई भी राष्ट्र तब तक उन्नति नहीं कर सकता है जब तक उस राष्ट्र के प्रत्येक मानव को विकास के सर्वोत्तम अवसर न मिले। आज के इस वैश्वीकरण में शिक्षा का स्वरूप काफी परिवर्तित हो चुका है। शिक्षा की सम्पूर्ण बागडोर शिक्षक के हाथो में होती है इसलिये शिक्षकों को जागरूक करने के लिये शिक्षक शिक्षा की महती आवश्यकता है। शिक्षा के गुणात्मक स्तर को बढ़ाने के लिये अच्छा अध्यापन अच्छे अध्यापक पर निर्भर करता है। आज सूचना और प्रौद्योगिकी के युग में परम्परागत तरीके से कक्षा शिक्षण–अभ्यास में नई विधियों एवं नवाचारों की आवश्यकता है। यदि कक्षा शिक्षण अभ्यास मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों की कसौटी पर खरा उतारना है तो शिक्षको को प्रशिक्षण के माध्यम से सैद्धान्तिक और व्यवहारिक ज्ञान कराया जा सकता है। यूँ तो भारत वर्ष में शिक्षण प्रशिक्षण की शुरूआत वैदिक काल, बौद्धकाल, मध्यकाल, ईसाई मिशनरी काल, ब्रिटिश शासन काल तथा विभिन्न आयोगो के सुझाव के आधार पर की गई। सन् 1973 में भारत सरकार ने U.G.C. और N.C.E.R.T. के सहयोग से N.C.T.E. की स्थापना की और N.C.T.E. ने बी० एड० पाठ्यक्रम में सुधार हेतु काफी परिवर्तन कर महाविद्यालयों में लागू कर दिया।

किसी भी प्रगतिशील राष्ट्र द्वारा अपने विकास हेतु अपनाये गये विविध साधनों में शिक्षा का एक महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षा की प्रक्रिया में शिक्षक ही वह धुरी है जिसके चारों ओर सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली चक्कर लगाती है। शिक्षक ही विद्यालय तथा शिक्षा पद्धति की वास्तविक गत्यात्मक शक्ति हैं। यह सत्य है कि विद्यालय भवन, पाठ्यक्रम सहगामी क्रियायें, निर्देशन कार्यक्रम, पाठ्यपुस्तकें आदि सभी वस्तुयें शैक्षिक कार्यक्रम में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं, परन्तु जब तक उनमें कुशल प्रशिक्षित शिक्षक द्वारा जीवनशक्ति नहीं दी जायेगी तब तक वे निरर्थक रहेगी। प्रायः यह विचार व्यक्त किया जाता है कि शिक्षक जन्मजात होते है और इन्हें प्रशिक्षण संस्थाओं द्वारा उत्पन्न नहीं किया जा सकता। परन्तु कोई भी प्रगतिशील राष्ट्र जो तीव्र सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तनों तथा उनमें विकास की कामना करता है, थोड़े से जन्मजात अध्यापकों की सेवा से संतुष्ट नहीं हो सकता। अपनी विशाल जनसंख्या को अपने उद्देश्यों एवं कार्यक्रमों से अवगत कराने के लिये उसे बहुत बड़ी संख्या में योग्य एवं निपुण अध्यापकों को तैयार करने की आवश्यकता होती है। इसी उद्देश्य की प्राप्ति हेतु शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम की स्थापना की गयी।

शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत शिक्षक ही एकमात्र वह व्यक्ति होता है जो बालकों के कौशल को पहचान कर उनकी छिपी हुई योग्यताओं को समाज के सामने लाने में सफलतम प्रयत्न करता है इसलिये शिक्षकों को विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। शिक्षण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से शिक्षक भावी शिक्षक के व्यक्तित्व के विकास का हर संभव प्रयास करते हैं। अतः शिक्षण व्यक्ति के विकास में तो सहायक है परन्तु प्रभावी शिक्षण इससे भी बढ़कर है। कोठारी आयोग का भी मानना था कि शिक्षक को शिक्षा के विकास की कुंजी माननी चाहिये। एक शिक्षक की भूमिका निर्धारित कोर्स समाप्त करने से लेकर व्यक्तित्व निर्माण तक ही सीमित नहीं, बल्कि समाज, राष्ट्र एवं जनतंत्र हेतु उपयोगी नागरिकों का निर्माण भी है। निर्माण की इस प्रक्रिया में शिक्षकों की भूमिका अकथनीय होती है।

वर्तमान वैश्वीकरण के युग में उच्च शिक्षा की विषयवस्तु, अध्यापन आवश्यकताएँ तथा अध्यापकीय दृष्टिकोण सभी बदल गए हैं। इसलिए उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम में भी अत्यधिक परिवर्तन दृष्टिगत हो रहा

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Birsinghpur
Jhahuri, Samastipur

है। आज मानविकी विषयों के स्थान पर विविध आयामी व्यावसायिक पाठ्यक्रमों पर बल दिया जा रहा है। इसलिए उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम में ऊर्जा संरक्षण, पर्यावरण प्रदूषण एवं बचाव, जनसंख्या शिक्षा, रोग मुक्ति व रोग नियंत्रण के उपाय, सकारात्मक मूल्यों का विकास, कौशल विकास, मानवाधिकार, शान्ति शिक्षा, कम्प्यूटर से लेकर अंतरिक्ष विज्ञान तक, समुद्र के गर्भ से लेकर वास्तुशास्त्र, खनिजशास्त्र तक आदि नवीन विषयों का समावेश किया जा रहा है। पाठ्यक्रमों में आए इस परिवर्तन को विद्यालय में प्रभावकारी ढंग से लागू करना शिक्षकों के लिए एक बड़ी चुनौती है जिसके लिए उन्हें अपनी दक्षता में वृद्धि करनी होगी और इसके लिए उन्हें सशक्त बनना होगा।

शिक्षक का कार्य वास्तव में अन्य कार्यों से अधिक महत्वपूर्ण और चुनौती भरा है क्योंकि उसे भावी नागरिकों का निर्माण करना है, उस पीढ़ी का निर्माण करना है, जो संस्कृति की संवाहक होगी। आज शिक्षक को पारम्परिक शिक्षण के स्थान पर नवाचार की ओर उन्मुख होना पड़ेगा। यदि शिक्षक को उचित संसाधन, नवाचारों व उपयुक्त प्रशिक्षण के द्वारा सशक्त कर दिया जाए तो निःसंदेह भारत के विश्वविद्यालय विश्व की रैंकिंग में उच्च स्थान प्राप्त कर सकेंगे और उच्च शिक्षा के लिए छात्रों को विदेश जाने की जरूरत नहीं होगी वरन् विदेशी छात्र भारत में अध्ययन करने के लिए आयेंगे जिससे भारत आर्थिक रूप से समृद्ध हो सकेगा एवं नालंदा के समय की तरह भारत एक बार पुनः विश्व गुरू बनकर विश्व को ज्ञान के प्रकाश से आलोकित करेगा।

किसी भी समाज में उपस्थित लोगों की मनोवृति ही वह कारक है, जो समाज की दशा एवं दिशा तय करती हैं। शिक्षित युवा वर्ग तो किसी भी समाज या देश की रीढ़ है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि शिक्षित युवा के विचारों के प्रभाव से अनेक परिवर्तन हुए तथा जिन्होंने उस समाज या देश की नई कहानी लिख दी। आज प्रत्येक राष्ट्र–राज्य अपने को वैश्वीकरण की धारा में सबसे आगे बढ़ने का प्रयास कर रहा है। इस प्रयास की सफलता बहुत कुछ राज्य या राष्ट्र के भविष्य कहे जाने वाले विद्यार्थियों पर निर्भर करती है। चूँकि इन विद्यार्थियों को दिशा–निर्देश देने का दायित्व प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके युवाओं पर सौंपा गया है, इसलिए शैक्षिक प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे युवक वैश्वीकरण के प्रति किस प्रकार की धारणा रख रहे हैं। इसका अध्ययन किया जाना आवश्यक है।

हमारे देश में जहाँ शिक्षित बेरोजगारों के साथ–साथ प्रशिक्षित बेरोजगारों की भी बड़ी संख्या है। आज शिक्षित बेरोजगारों के साथ–साथ प्रत्येक प्रशिक्षित बेरोजगार भी शिक्षण व्यवसाय की ओर बड़ी आशा से देख रहे हैं। प्रशिक्षित बेरोजगारों में शिक्षक प्रशिक्षण प्राप्त युवाओं की बड़ी संख्या है। ये युवा अपने प्रशिक्षण का उपयोग भविष्य में भारत की कक्षाओं में भारत के भविष्य के निर्माण में करेंगे। इसलिए आवश्यक है कि इन शिक्षक–प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे युवाओं की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति को जानने का प्रयास किया जाए। सम्पूर्ण देश को वैश्विक व्यवस्था के साथ–साथ चलने के लिए तथा नागरिकों के विचारों में शिक्षण व्यवसाय के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने की दिशा में यह अध्ययन बहुत ही महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः हम कह सकते है कि वर्तमान समय में शिक्षण व्यवसाय के प्रति छात्र–छात्राओं का झुकाव बढ़ा है। इसका मुख्य कारण है इस व्यवसाय में अवसर की पर्याप्तता। शिक्षा ही वह माध्यम है, जिसके द्व

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College

रा वैश्वीकरण की प्रक्रिया को तीव्र बनाया जा सकता है तथा इसके नकारात्मक पक्षों पर अंकुश लगाया जा सकता है, क्योंकि शिक्षा उन साधनों से परिचय कराती है जिनसे परम्परागत साधनों के विकल्प स्वरूप वैश्विक लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता है। वह मानसिक परिप्रेक्ष्य को व्यापक बनाती है और नये प्रयोगों एवं उपलब्धियों की ओर उन्मुख करती है।

सन्दर्भ स्रोत

1. बेस्ट जॉन, डब्ल्यू (1982), रिसर्च इन एजुकेशन, नई दिल्ली : प्रेन्टाइस हॉल ऑफ इण्डिया प्राईवेट लि०।
2. मिश्रा, लोकनाथ (2007), रिफलेक्शन ऑफ प्यूपिल टीचर्स ऑफ दू ईयर्स बी० एड० कोर्स दू वर्डस टीचिंग टीचर्स एजूकेशन, वॉल्यू , (6).
3. चित्रलेखा व कुमार मनोज (2015), कौशल विकास–आज की लम्बित माँग, नई दिल्ली।
4. गिलफोर्ड, जे० पी० (1950), क्रिएटिविटी, अमेरिकन साईकॉलजीस्ट, वॉल्यू, (5)
5. भटनागर, आर० पी० एवं भटनागर, ए० बी० (1995), शिक्षा अनुसंधान ईगल बुक्स इन्टरनेशनल मेरठ।
6. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005, एन०सी०ई०आर०टी०, नई दिल्ली।
7. राणा, पी० एस० (2013), ए स्टडी ऑफ टीचिंग कम्पीटेंसी इन प्री० एण्ड पोस्ट ट्रेनिंग ऑफ बी० एड० ट्रेनीज इन रिलेशन टू देयर रैंक डिफरेंस इन एन्ट्रेंस टेस्ट, एजुकेशनीय कॉनफेस, वॉल्यू, (2), सं० 2 फरवरी 2013.
8. राजपूत, जे० (2012), अध्यापकों के सामने उभरती चुनौतियाँ, नई दिल्ली: भा०आ०शि०, एन०सी०ई०आर०टी०, अंक 3, जनवरी 2011.
9. शाह, सुजाता (2015), मिश्रित अधिगम–आपेक्षित आधुनिक अध्यापन शैली व शिक्षण।
10. डेविड ए० (2005), टीचिंग इंगलिश फॉर क्रिएटिव एक्टीविटी, नई दिल्ली: कॉमनवेल्थ पब्लिशर्स।

PRINCIPAL
St Paul Teachers' Training College
Birsinghpur
Jhahuri, Samastipur

Analysis of the Indian National Education Policy 2020

Mr. Hasan Abad*

ABOUT NATIONAL EDUCATION POLICY (NEP) 2020

The National Policy on Education was framed in 1986 and modified in 1992. Since then several changes have taken place that calls for a revision of the Policy.

The NEP 2020 is is the first education policy of the 21st century and replaces the thirty-four year old National Policy on Education (NPE), 1986. Built on the foundational pillars of Access, Equity, Quality, Affordability and Accountability, this policy is aligned to the 2030 Agenda for Sustainable Development and aims to transform India into a vibrant knowledge society and global knowledge superpower by making both school and college education more holistic, flexible, multidisciplinary, suited to 21st century needs and aimed at bringing out the unique capabilities of each student.

SALIENT FEATURES OF THE NEP 2020

School Education

Ensuring Universal Access at all levels of school education

NEP 2020 emphasizes on ensuring universal access to school education at all levels- pre school to secondary. Infrastructure support, innovative education centres to bring back dropouts into the mainstream, tracking of students and their learning levels, facilitating multiple pathways to learning involving both formal and non-formal education modes, association of counselors or well-trained social workers with schools, open learning for classes3,5 and 8 through NIOS and State Open Schools, secondary education programs equivalent to Grades 10 and 12, vocational courses, adult literacy and life-enrich`ment programs are some of the proposed ways for achieving this. About 2 crore out of school children will be brought back into main stream under NEP 2020.

Early Childhood Care & Education with new Curricular and Pedagogical Structure

With emphasis on Early Childhood Care and Education, the 10+2 structure of school curricula is to be replaced by a 5+3+3+4 curricular structure corresponding to ages 3-8, 8-11, 11-14, and 14-18 years respectively. This will bring the hitherto uncovered age group of 3-6 years under school curriculum, which has been recognized globally as the crucial stage for development of mental faculties of a child. The new system will have 12 years of schooling with three years of Anganwadi/ pre schooling.

NCERT will develop a National Curricular and Pedagogical Framework for Early Childhood Care and Education (NCPFECCE) for children up to the age of 8. ECCE will be delivered through a significantly expanded and strengthened system of institutions including Anganwadis and pre-schools that will have teachers and Anganwadi workers trained in the ECCE pedagogy and curriculum. The planning and implementation of ECCE will be carried out jointly by the Ministries of HRD, Women and Child Development (WCD), Health and Family Welfare (HFW), and Tribal Affairs.

*Assistant Professor, St. Paul Teachers' Training College, Birsinghpur, Samastipur, Bihar.

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Birsinghpur
Jhahuri, Samastipur

Attaining Foundational Literacy and Numeracy

Recognizing Foundational Literacy and Numeracy as an urgent and necessary prerequisite to learning, NEP 2020 calls for setting up of a National Mission on Foundational Literacy and Numeracy by MHRD. States will prepare an implementation plan for attaining universal foundational literacy and numeracy in all primary schools for all learners by grade 3 by 2025.A National Book Promotion Policy is to be formulated.

Reforms in school curricula and pedagogy

The school curricula and pedagogy will aim for holistic development of learners by equipping them with the key 21st century skills, reduction in curricular content to enhance essential learning and critical thinking and greater focus on experiential learning. Students will have increased flexibility and choice of subjects. There will be no rigid separations between arts and sciences, between curricular and extra-curricular activities, between vocational and academic streams.

Vocational education will start in schools from the 6th grade, and will include internships.

A new and comprehensive National Curricular Framework for School Education, NCFSE 2020-21, will be developed by the NCERT.

Multilingualism and the power of language

The policy has emphasized mother tongue/local language/regional language as the medium of instruction at least till Grade 5, but preferably till Grade 8 and beyond. Sanskrit to be offered at all levels of school and higher education as an option for students, including in the three-language formula. Other classical languages and literatures of India also to be available as options. No language will be imposed on any student. Students to participate in a fun project/activity on 'The Languages of India', sometime in Grades 6-8, such as, under the 'Ek Bharat Shrestha Bharat' initiative. Several foreign languages will also be offered at the secondary level. Indian Sign Language (ISL) will be standardized across the country, and National and State curriculum materials developed, for use by students with hearing impairment.

Assessment Reforms

NEP 2020 envisages a shift from summative assessment to regular and formative assessment, which is more competency-based, promotes learning and development, and tests higher-order skills, such as analysis, critical thinking, and conceptual clarity. All students will take school examinations in Grades 3, 5, and 8 which will be conducted by the appropriate authority. Board exams for Grades 10 and 12 will be continued, but redesigned with holistic development as the aim. A new National Assessment Centre, PARAKH (Performance Assessment, Review, and Analysis of Knowledge for Holistic Development), will be set up as a standard-setting body.

Equitable and Inclusive Education

NEP 2020 aims to ensure that no child loses any opportunity to learn and excel because of the circumstances of birth or background. Special emphasis will be given on Socially and Economically Disadvantaged Groups(SEDGs) which include gender, socio-cultural, and geographical identities and disabilities. This includes setting up of Gender Inclusion Fund and also Special Education Zones for disadvantaged regions and groups. Children with disabilities will be enabled to fully participate in the regular schooling process from the foundational stage to higher education, with support of educators with cross disability training, resource centres, accommodations, assistive devices,

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Birsinghpur
Jhahuri, Samastipur

appropriate technology-based tools and other support mechanisms tailored to suit their needs. Every state/district will be encouraged to establish "Bal Bhavans" as a special daytime boarding school, to participate in art-related, career-related, and play-related activities. Free school infrastructure can be used as Samajik Chetna Kendras

Robust Teacher Recruitment and Career Path

Teachers will be recruited through robust, transparent processes. Promotions will be merit-based, with a mechanism for multi-source periodic performance appraisals and available progression paths to become educational administrators or teacher educators. A common National Professional Standards for Teachers (NPST) will be developed by the National Council for Teacher Education by 2022, in consultation with NCERT, SCERTs, teachers and expert organizations from across levels and regions.

School Governance

Schools can be organized into complexes or clusters which will be the basic unit of governance and ensure availability of all resources including infrastructure, academic libraries and a strong professional teacher community.

Standard-setting and Accreditation for School Education

NEP 2020 envisages clear, separate systems for policy making, regulation, operations and academic matters. States/UTs will set up independent State School Standards Authority (SSSA). Transparent public self-disclosure of all the basic regulatory information, as laid down by the SSSA, will be used extensively for public oversight and accountability. The SCERT will develop a School Quality Assessment and Accreditation Framework (SQAAF) through consultations with all stakeholders.

Higher Education

Increase GER to 50 % by 2035

NEP 2020 aims to increase the Gross Enrolment Ratio in higher education including vocational education from 26.3% (2018) to 50% by 2035. 3.5 Crore new seats will be added to Higher education institutions.

Holistic Multidisciplinary Education

The policy envisages broad based, multi-disciplinary, holistic Under Graduate education with flexible curricula, creative combinations of subjects, integration of vocational education and multiple entry and exit points with appropriate certification. UG education can be of 3 or 4 years with multiple exit options and appropriate certification within this period. For example, Certificate after 1 year, Advanced Diploma after 2 years, Bachelor's Degree after 3 years and Bachelor's with Research after 4 years.

An Academic Bank of Credit is to be established for digitally storing academic credits earned from different HEIs so that these can be transferred and counted towards final degree earned.

Multidisciplinary Education and Research Universities (MERUs), at par with IITs, IIMs, to be set up as models of best multidisciplinary education of global standards in the country.

The National Research Foundation will be created as an apex body for fostering a strong research culture and building research capacity across higher education.

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Birsinghpur
Jhahuri, Samastipur

Regulation

Higher Education Commission of India(HECI) will be set up as a single overarching umbrella body the for entire higher education, excluding medical and legal education. HECI to have four independent verticals - National Higher Education Regulatory Council (NHERC) for regulation, General Education Council (GEC) for standard setting, Higher Education Grants Council (HEGC) for funding, and National Accreditation Council(NAC) for accreditation. HECI will function through faceless intervention through technology, & will have powers to penalise HEIs not conforming to norms and standards. Public and private higher education institutions will be governed by the same set of norms for regulation, accreditation and academic standards.

Rationalised Institutional Architecture

Higher education institutions will be transformed into large, well resourced, vibrant multidisciplinary institutions providing high quality teaching, research, and community engagement. The definition of university will allow a spectrum of institutions that range from Research-intensive Universities to Teaching-intensive Universities and Autonomous degree-granting Colleges.

Affiliation of colleges is to be phased out in 15 years and a stage-wise mechanism is to be established for granting graded autonomy to colleges. Over a period of time, it is envisaged that every college would develop into either an Autonomous degree-granting College, or a constituent college of a university.

Motivated, Energized, and Capable Faculty

NEP makes recommendations for motivating, energizing, and building capacity of faculty thorugh clearly defined, independent, transparent recruitment, freedom to design curricula/pedagogy, incentivising excellence, movement into institutional leadership. Faculty not delivering on basic norms will be held accountable

Teacher Education

A new and comprehensive National Curriculum Framework for Teacher Education, NCFTE 2021, will be formulated by the NCTE in consultation with NCERT. By 2030, the minimum degree qualification for teaching will be a 4-year integrated B.Ed. degree. Stringent action will be taken against substandard stand-alone Teacher Education Institutions (TEIs).

Mentoring Mission

A National Mission for Mentoring will be established, with a large pool of outstanding senior/ retired faculty – including those with the ability to teach in Indian languages – who would be willing to provide short and long-term mentoring/professional support to university/college teachers.

Financial support for students

Efforts will be made to incentivize the merit of students belonging to SC, ST, OBC, and other SEDGs. The National Scholarship Portal will be expanded to support, foster, and track the progress of students receiving scholarships. Private HEIs will be encouraged to offer larger numbers of free ships and scholarships to their students.

Open and Distance Learning

This will be expanded to play a significant role in increasing GER. Measures such as online courses and digital repositories, funding for research, improved student services, credit-based recognition of MOOCs, etc., will be taken to ensure it is at par with the highest quality in-class programmes.

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Bhirighpur
Jhahuri, Samastipur

Online Education and Digital Education

A comprehensive set of recommendations for promoting online education consequent to the recent rise in epidemics and pandemics in order to ensure preparedness with alternative modes of quality education whenever and wherever traditional and in-person modes of education are not possible, has been covered. A dedicated unit for the purpose of orchestrating the building of digital infrastructure, digital content and capacity building will be created in the MHRD to look after the e-education needs of both school and higher education.

Technology in education

An autonomous body, the National Educational Technology Forum (NETF), will be created to provide a platform for the free exchange of ideas on the use of technology to enhance learning, assessment, planning, administration. Appropriate integration of technology into all levels of education will be done to improve classroom processes, support teacher professional development, enhance educational access for disadvantaged groups and streamline educational planning, administration and management

Promotion of Indian languages

To ensure the preservation, growth, and vibrancy of all Indian languages, NEP recommends setting an Indian Institute of Translation and Interpretation (IITI), National Institute (or Institutes) for Pali, Persian and Prakrit, strengthening of Sanskrit and all language departments in HEIs, and use mother tongue/local language as a medium of instruction in more HEI programmes.

Internationalization of education will be facilitated through both institutional collaborations, and student and faculty mobility and allowing entry of top world ranked Universities to open campuses in our country.

Professional Education

All professional education will be an integral part of the higher education system. Stand-alone technical universities, health science universities, legal and agricultural universities etc will aim to become multi-disciplinary institutions.

Adult Education

Policy aims to achieve 100% youth and adult literacy.

Financing Education

The Centre and the States will work together to increase the public investment in Education sector to reach 6% of GDP at the earliest.

OUTCOMES OF NEP 2020

- Universalization from ECCE to Secondary Education by 2030, aligning with SDG 4
- Attaining Foundational Learning & Numeracy Skills through National Mission by 2025
- 100% GER in Pre-School to Secondary Level by 2030
- Bring Back 2 Cr Out of School Children
- Teachers to be prepared for assessment reforms by 2023
- Inclusive & Equitable Education System by 2030
- Board Exams to test core concepts and application of knowledge
- Every Child will come out of School adept in at least one Skill
- Common Standards of Learning in Public & Private Schools

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Birsinghpur
Jhahuri, Samastipur

REFERENCES

1. New Education Policy, 2020 Highlights: School and Higher Education to See Major Changes. 2020. Hindustan Times. Available from: https://www.hindustantimes.com/education/new-education-policy-2020-live-updates-important-takeaways/story-yYm1QaeNyFW4uTTU3g9bJO.html
2. New Education Policy, Government of India, Ministry of Human Resource Development. 2020. Available from: https://www.mhrd.gov.in/nep-new
3. 2020. Available from: https://www.aiu.ac.in/vcmeeting.php
4. 2020. Available from: https://www.nludelhi.ac.in/up-event1.aspx?id=35094
5. Available from: https://www.aiu.ac.in/documents/AIU_Publications/AIU%20Books/Reimagining%20Indian%20Universities.pdf
6. Encyclopedia Britannica. 2020. Available from: https://www.britannica.com/science/survival-of-the-fittest
7. Papathanassiou M. Quotes by Charles Darwin. 2020. Best Quotations. Available from: https://www.best-quotations.com/authquotes.php?auth=882
8. Einstein A. We cannot Solve Our Problems with the Same Thinking we used when we Created Them. 2020. Available from: https://www.articulous.com.au/problem-solving
9. Available from: http://www.kkhsou.in/main/education/education_1948.html [Last accessed on 2020 Oct 04]

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Birsinghpur
Jhahuri, Samastipur

 ISSN NO: 2347-6648

दरभंगा जिला के नजदीकी गाँव में रहने वाले लोगों का बच्चों की प्राथमिक शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का एक अध्ययन

एस0 एम0 तहसीन आलम कादरी सहायक प्राध्यापक, संत पॉल टी.टी.कॉलेज,समस्तीपुर

सारांश

शिक्षा एक ऐसा हथियार है जिससे समाज के अंधकार को दूर किया जा सकता है तथा मानव के जीवन में प्रकाश का संचार होता है। शिक्षा के अभाव में ना तो समाज का विकास हो सकता है और न ही देश का विकास ही संभव है। शिक्षा राष्ट्र के विकास में महत्ती भूमिका निभाता है। समाज के आर्थिक, सामाजिक तथा लोकतांत्रिक विकास में अपनी महत्वपूर्ण भुमिका निभाता है। शिक्षा व्यक्ति में रचनात्मक एवं सृजनात्मक दृष्टिकोण का विकास करती है। शिक्षा समाज की आवश्यकताओं और आकांक्षाओं की पूर्ति करता है। प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्ता के द्वारा दरभंगा जिला के नजदीकी गाँव में रहने वाले लोगों का बच्चों के प्राथमिक शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का महत्वपूर्ण अध्ययन किया है। इसमें दरभंगा जिला के नदजीकी गाँव को परिसीमित किया है। इन क्षे.त्रों के 100 लोगों का चयन न्यायदर्श के रूप में लिया गया है, एवं स्वनिर्मित प्रशानावली द्वारा डाटा एकत्रित किया गया जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि दरभंगा जिले के नजदीकी गाँव में रहने वाले लोगो का बच्चों के प्राथमिक शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण नहीं होता है, एवं पारिवारिक, सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति का बच्चों की प्राथमिक शिक्षा पर प्रभाव पड़ता है। उनमें इन शोध के द्वारा उनकी समस्याओं का निदान किया जा सकता है और उनमें जागरूकता लाई जा सकती है।

परिचय

शिक्षा वह प्रकाश है जो अज्ञानता रूपी अंधकार को दूर कर मानव का जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में पथ प्रदर्शन करती है। शिक्षा का वास्तविक अर्थ है– मनुष्य का सर्वांगीण विकास करना। पुस्तकीय ज्ञान प्राप्त करना अथवा साक्षरता शिक्षा नहीं है वह तो शिक्षा प्राप्त करने का मात्र साधन है। शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक एवं मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क एवं आत्मा के सर्वोत्तम अंश की अभिव्यक्ति से है। शिक्षा के द्वारा–मनुष्य को ज्ञान व योग्यता प्राप्त होती है। डॉ0 राधाकृष्णन के शब्दों में शिक्षा को मनुष्य और समाज का निर्माण करना चाहिए। इस कार्य के बिना शिक्षा अपूर्ण है। वस्तुतः मनुष्य सही अर्थ में मनुश्य तभी बनता है जबवह शिक्षित है। सही शिक्षा से ही संस्कारों का निमार्ण होता है और सही संस्कारों से ही समाज का निर्माण होता है।

ठाकुर सिंह एवं श्रीवास्तव (1978) माता–पिता की शिक्षा स्तर कक्षा पहली के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करता है जबकि कक्षा 5वीं के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि माता–पिता की शिक्षा के अतिरिक्त समाजिक, आर्थिक स्तर और कई कारणों से प्रभावित होती है। ग्राम सेन एवं राईटर 1948 के अनुसार मंद बुद्धि वाले छात्रों की सामाजिक स्थिति उच्चबुद्धि वाले छात्र छात्रओं की सामाजिक स्थिति बहुत अधिक आशापूर्ण अंतर नहीं था। आनंद 1973 हेवर 1956, बोनी 1955 एवं स्मिथ 1944, विश्वास 1975, वी0 राधिका 1987, माथुर 1985 ने अपने शोध के आधार पर निम्न निष्कर्ष दिये हैं। जिनके अनुसार उच्च सामाजिक आर्थिक स्थिति वाले छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि उच्च, तथा निम्न सामाजिक स्थिति वाले छात्राओं की शौक्षिक उपलब्धि निम्न पायी गयी। सेन 1976 के अनुसार अशिक्षित एवं गरीब परिवार के अभिभावक शिक्षा के प्रति उदासीन है। निम्न वर्ग के लोग शिक्षा की अपेक्षा शारीरिक श्रम द्वारा धनार्जन को अधिक–महत्व देते है, जबकि उच्च सामाजिक आर्थिक स्थिति वाले परिवार में शिक्षा के प्रति जगरूकता अधिक है।

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Birsinghpur, Jhahuri, Samastipur

अध्ययन का उद्देश्य

1. दरभंगा जिला के नजदीकी गाँवों में रहने लोगों का बच्चे की प्राथमिक शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण ज्ञात करना।
2. प्राथमिक शालाओं में बच्चों को प्रवेश लेने में आने वाली समस्याओं को ज्ञात करना।
3. बच्चो का प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने में आने वाली समस्याओं को ज्ञात करना।

परिकल्पनाएँ

1. दरभंगा जिला के नजदीकी गाँवों में रहने वाले लोगों का शैक्षणिक योग्यता के आधार पर बच्चों की प्राथमिक शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण होता है।
2. दरभंगा जिला के नजदीकी गॉवों में रहने वाले लोगों की अर्थिक स्थिति का बच्चों की प्राथमिक शिक्षा पर प्रभाव पड़ता है।
3. दरभंगा जिला के नजदीकी गाँवों में रहने वाले लोगों की पारिवारिक सामाजिक स्थिति का बच्चों की प्राथमिक शिक्षा पर प्रभाव पड़ता है।

न्यादर्श एवं परिसीमन

प्रस्तुत शोध कार्य को समय की अल्पता, अध्ययन की गहनता को ध्यान में रख कर दरभंगा जिला के आसपास के गाँव, एकमीघाट, तारालाही, डीलाही, औझौल, चन्डी, विशनपुर, इतियादी क्षेत्रों के 100 लोगों का चयन न्यादर्श के रूप किया गया है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत शोध रामस्या में प्रदत्तों के संकलन के लिए अग्रलिखित उपकरणों का प्रयोग किया गया है:–

अ) प्रश्नावली

ब) प्रत्यक्ष अवलोकन

स) साक्षत्कार

शोध कार्य से सम्बन्धित तथ्यों के सकलन के लिय स्वनिर्मित प्रश्नावली का निर्माण किया गया है।

परिणाम एवं निष्कर्ष

परिकल्पना 1

दरभंगा जिला के नजदीकी गाँव में रहने वाले लोगों का शैक्षणिक योग्यता के आधार पर बच्चों की प्राथमिक शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण होता है।

व्याख्या

दरभंगा जिला के नजदीकी गाँव में रहने वाले लोग कम पढ़े–लिखे पाये गये वे बच्चों की प्राथमिक शिक्षा के प्रति उदासीन होते है। उनका मानना है कि बच्चे पढ़कर ही क्या करेंगे ऐसा सोचने वालो का प्रतिशत 58 प्रतिशत है।

अतः हमारी परिकल्पना गलत साबित हुई दरभंगा जिला के नजदीकी गाँव में रहने वाले लोगों का बच्चों को प्राथमिक शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण नहीं होता।

दरभंगा जिला के नजदीकी गाँवों में रहने वाले जो ऐसा सोचते है कि बच्चे पढ़कर ही क्या करेंगे ऐसा सोचने वालों का प्रतिशत–

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Birsinghpur
Jhahuri, Samastipur

Journal of the Asiatic Society of Mumbai
ISSN: 0972-0766
UGC Care Group 1 Journal

छात्रों पर यौन शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन

अर्पणा कुमारी

शोधकर्ता, शिक्षा विभाग, डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम विश्वविद्यालय, इंदौर, मध्य प्रदेश

डॉ. सतीश गिल

शोध निर्देशक, शिक्षा विभाग, डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम विश्वविद्यालय, इंदौर, मध्य प्रदेश

सारांश

यौन शिक्षा एक महत्वपूर्ण विषय है जो समाज में स्वास्थ्यपूर्ण यौन जीवन की समझाने और यौन स्वास्थ्य सम्बन्धित मुद्दों को सवालों से निपटने की क्षमता को बढ़ावा देने का कार्य करता है। यौन शिक्षा का ज्ञान उतना ही जरूरी है, जितना कि दूसरे विषयों का ज्ञान होना जरूरी है। हमारे देश में कॉलेज तक में सेक्स एजुकेशन के बारे में नहीं बताया जाता है, जिसके परिणामस्वरूप सेक्स एजुकेशन से जुड़ी भ्रान्तियाँ, सेक्स संबंधी अन्धविश्वास और इससे जुड़ी कई समस्याऐं उत्पन्न होती है। परम्परागत रूप से हमारी संस्कृति में किशोरों को यौन संबंधों के बारे में जानकारी नहीं दी जाती है वास्तव में इस मुद्दे पर बात करना भी वर्जित माना जाता है लोग मानते हैं कि शादी से पहले यौन क्रियाओं के बारे में जानना जरूरी नहीं होता है लेकिन समय बदलने के साथ ही यौन संबंधों को लेकर धारणा भी बदली है। W.H.O. के अनुसार 12 वर्ष और उससे अधिक उम्र के बच्चों पर यौन शिक्षा दी जानी अनिवार्य है। एक आंकड़े के अनुसार एच. आई. वी. संक्रमित व्यक्तियों में से 34: 1 से 19 आयु वर्ग के है।

मुख्यशब्द– छात्र, यौन शिक्षा, स्वास्थ्यपूर्ण यौन जीवन

प्रस्तावना

यौन शिक्षा, समाज में यौन संबंधों के बारे में सही और विवेकपूर्ण जानकारी प्रदान करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है जो छात्रों के यौन स्वास्थ्य और यौन जीवन को समझने में मदद करता है। यह उन्हें सही निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करता है और साथ ही उनकी सामाजिक सचेतना को भी बढ़ावा देता है। यौन शिक्षा का महत्व आजकल के तेजी से बदलते समाज में और भी अधिक महत्वपूर्ण हो गया है, क्योंकि यह छात्रों को सुरक्षित और समृद्ध यौन जीवन के मार्गदर्शन के साथ ही यौन संबंधों के विभिन्न पहलुओं को समझने में मदद करता है।

यौन शिक्षा का मुख्य उद्देश्य छात्रों को यौन संबंधों के प्रति सही जानकारी प्रदान करना है, जिससे वे स्वस्थ यौन जीवन के लिए सजग हो सकें और सुरक्षित निर्णय ले सकें। यह छात्रों को यौन संबंधों के जोखिमों, जनन रोगों, गर्भावस्था और बच्चे की देखभाल के बारे में जागरूक करता है। यौन शिक्षा के माध्यम से छात्रों के यौन संबंधों में सही और गलत की पहचान करने की क्षमता प्राप्त होती है और वे सम्पूर्ण विकासशील नागरिक बनते हैं।

इस समय, यौन शिक्षा के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण में बदलाव दिखाई देता है, लेकिन यह तब तक सफल नहीं हो सकता जब तक हम छात्रों के यौन शिक्षा के महत्व को समझने और स्वीकारने के प्रति सक्षम नहीं होते। इस प्रकार, यौन शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन हमें छात्रों के सशक्त और समृद्ध भविष्य की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान की संभावना प्रदान करता है।

विद्यार्थियो को यौन शिक्षा की आवश्यकता

विभिन्न कारणों से सेक्स एजुकेशन की आवश्यकता है सेक्स शिक्षा काफी कारणों से महत्वपूर्ण है जैसे– किशोरावस्था, के समय किशोरों को शारीरिक रूप से अपने शरीर में होने वाले परिवर्तनों को जानना चाहिए। यह केवल सही सेक्स एजुकेशन प्रदान करने से संभव हो सकता है। गर्भावस्था, यौन संचारित रोग (एस टीडी) और मानव इम्यूनो वायरस (एचआईवी) के बारे में जागरूकता लाने के लिए सेक्स शिक्षा की आवश्यकता है ताकि युवा अधिक जिम्मेदार बन सकें। और सेक्स के सम्बन्ध बेहतर निर्णय ले सके। विद्यार्थियों को यौन शिक्षा के बारे में सिखाना भी महत्वपूर्ण है। यौन शिक्षा के द्वारा बच्चों में गुड टच और बैड टच पहचानने की समझ का विकास

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Birsinghpur
Jhabua, Satna

होता है। छात्रों को स्कूल में यौन शिक्षा देने से उनके ऊपर गहरा प्रभाव पड़ता है और उन्हें यौन समस्याओं की विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है।

भारतीय समाज, में यौन जागरूकता पैदा करने के लिए सार्वजनिक स्थानों के बजाय घर के अंदर सेक्स पर चर्चा की जाती है वर्ष 1994 में जनसंख्या और विकास पर संयुक्त राष्ट्र अंतर्राष्ट्रिय सम्मेलन (आई सी पी डी) में भारत के किशोर और युवाओं के यौन प्रजनन अधिकारों की पुष्टि की गई थी। सम्मेलन में यह समझाया गया था कि किशोरावस्था और युवाओं के लिए उनके लिंगभेद और प्रजनन से संबंधित सभी मामलों पर मुक्त रूप से निर्णय लेने में सक्षम बनाने हेतु उन्हें लिंगभेद पर व्यापक शिक्षा की आवश्यकता होती है, इसलिए आई.सी.पी.डी. एजेंडा के तहत उनके द्वारा किये गये वादों को पूरा करने हेतु सरकार किशोरों और युवाओं के लिए मुफ्त और अनिवार्य व्यापक लैंगिक शिक्षा प्रदान करने के लिए स्कूलों को बाध्य कर रही है 2007 में भारत सरकार ने किशोर शिक्षा कार्य (ए.ई.पी) की शुरूआत की। हालांकि कई विरोधों और मोरल पुलिस ने इस कार्यक्रम के प्रकरण को 'अनुपयुक्त' ठहराया था और इस कार्यक्रम को अधिकांश राज्यों में प्रतिबंधित कर दिया गया था। यहाँ तक कि नकारात्मक सुर्खियों के बाद भी, यह कार्यक्रम उचित कार्यान्वयन के बिना चुनिंदा सरकारी/निजी स्कूलों में एईपी (किशोर शिक्षा कार्यक्रम) शुरू किया गया था। इस कार्यक्रम में बॉडी इमेज, हिंसा और दुर्व्यवहार, लिंग और लिंगभेद यौन रोग जैसे संवेदनशील मुद्दों के शामिल किया गया।

यौन शिक्षा के उद्देश्य

1. आजीवन यौन स्वास्थ्य को मजबूत आधार बनाए और यह संभव होता है किसी की पहचान, रिश्तों और अंतरंगता के बारे में सूचना और दृष्टिकोण, मान्यताओं और मूल्यों के बारे में जानकारी प्राप्त करके।
2. विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा परिभाषित किया गया है कि यौन स्वास्थ्य को न केवल रोग या एक दुर्बलता हैं बाल्कि यौन–स्वास्थ्य का संबंध शारीरिक भावानात्मक, मानसिकता और सामाजिक कल्याण के रूप में भी माना जाता है।
3. युवावस्थ में प्रवेश के कारण युवा अपने शारीरिक विकास और अपने व्यवहार में बदलावों का अनुभव करते हे, आमतौर पर, किशोरावस्था (12–19वर्ष) के दौरान इस सम्बन्ध में शिक्षा का प्रावधान एक महत्वपूर्ण युक्ति है।

भारत में समाज की बदलती गतिशीलता को ध्यान में रखते हुए, भारत सरकार ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति को वर्ष 2016 में लागू किया था, जो किशोरों के लिए स्कूलों में यौन शिक्षा के महत्व को सुरक्षा उपायों के रूप में स्वीकार करता है समय आ चुका है कि शिक्षकों द्वारा किशोरों को यौन शिक्षा की उचित जानकारी दी जाए। क्योंकि यौन संबंध बनाने के लिए आधी–अधूरी जानकारी खतरनाक हो सकती हे और किशोरों को जागरूक और तैयार रहना बेहतर है।

यौन शिक्षा का महत्व

अज्ञान से विकृत कौतूहल बढ़ता है और ज्ञान से विकृत कौतूहल कम होता है इस पंक्ति के संदर्भ में हम यौन शिक्षा के महत्व को समझ सकते है। आज समाज को परिस्थितियों और किशोरों को सही मार्गदर्शन की तलाश को देखते हुए यौन शिक्षा की जरूरत महसूस होती हैं आज से 100 साल पहले की बात करें तो पहले के रिवाज़ के मुताबिक लड़के–लड़कियाँ 15–16 या 14–15 वर्ा की आयु में विवाह बन्धन में बंध जाते थे। इसलिए शारीरिक विकास के बाद कुछ हफ्तों या कुछ वर्षों तक ही सामाजिक नियमों को पाबंदी रहती थी। अब युवाओं में 30 की उम्र तक शादी होती है पर सामाजिक अंकुश के नियम वैसे ही बने हुए है कुछ हफ्तों के लिए तो ऐसे नियमों का पालन किया जा सकता है लेकिन 15 साल तक ऐसे नियमों का पालन करना असंभव है यही वजह हैं कि अनचाहे गर्भ, एड्स जैसी महामारी और बलात्कार के प्रकरण हमारे देश में ज्यादा है।

हमें यह स्वीकार करना होगा कि अब बेहतर स्वास्थ्य और पोषण के कारण वयसंधि की आयु पहले से बहुत कम हो गई है। परिपक्वता भी अब जल्दी आ जाती है 11 से 13 वर्ष के किशोरा अब परिपक्व हो जाते है इसके अलावा अब चारों तरफ मीडिया के कारण उद्दीपन भी दिखाई देता है तो जहाँ एक और विवाह अधिक उम्र में हो रहे है वहीं वातावरण भावनाओं को जगाने वाला हो। जब हारमोन्स शरीर में कामेच्छा का बढ़ावा देंगे तो इस तरह के संबंध भी बनेंगे। इस समय की सामाजिक और जैविक समस्याओं का समाधान यौन शिक्षा के माध्यम से हो सकता है जब किशोर और युवा खुद को कामेच्छा और सामाजिक मूल्यों के पाठों के बीच पाते है तो निश्चित रूप

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Birsinghpur
Jhabua, Samastipur

से बहक सकते है ऐसे में वे कुंठित और परेशान भी रहते है बिना किसी मार्गदर्शन के वे गलत दिशा में आगे बढ़ सकते है और इसलिए उन्हें सही समझ देना बहुत जरूरी है।

यौन शिक्षा के प्रभाव

यौन शिक्षा का प्रभाव छात्रों के जीवन में व्यापक होता है और उनके विभिन्न पहलुओं पर सकारात्मक प्रभाव डालता है। यह उन्हें सही यौन संबंधों के प्रति सजग और जागरूक बनाता है जो स्वस्थ और समृद्ध यौन जीवन के प्रति महत्वपूर्ण होते हैं।

सही जानकारी प्राप्ति: यौन शिक्षा के माध्यम से छात्रों को सही और विवेकपूर्ण यौन ज्ञान प्राप्त होता है। वे यौन स्वास्थ्य, जनन रोग, गर्भावस्था, और बच्चे की देखभाल के बारे में जागरूक होते हैं, जिससे वे स्वस्थ यौन जीवन का आनंद उठा सकते हैं।

यौन संवेदनशीलता: यौन शिक्षा से छात्रों की यौन संवेदनशीलता बढ़ती है और वे अपने यौन संबंधों के प्रति सही दृष्टिकोण विकसित करते हैं। यह उन्हें स्वीकार्य और अस्वीकार्य स्थितियों के बीच भिन्न करने की क्षमता प्रदान करता है।

सामाजिक सुधार: यौन शिक्षा से छात्रों के बीच यौन समानता की भावना और समाज में जागरूकता बढ़ती है। यह समाज में सामाजिक सुधार की प्रक्रिया में मदद करता है और यौन विवादों और हिंसा को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

यौन संबंधों के खुले दृष्टिकोण: यौन शिक्षा से छात्र यौन संबंधों के प्रति खुले और सजग दृष्टिकोण विकसित करते हैं। यह उन्हें यौन संबंधों के विभिन्न पहलुओं को समझने और समझाने में मदद करता है और संवेदनशील विषयों पर खुलकर बात करने की क्षमता प्रदान करता है।

स्वास्थ्यपूर्ण यौन जीवन: यौन शिक्षा के प्रभाव से छात्र स्वास्थ्यपूर्ण यौन जीवन का आनंद उठा सकते हैं और उन्हें स्वस्थ यौन संबंध बनाने में मदद मिलती है।

जागरूकता और सुरक्षा: यौन शिक्षा से छात्र यौन संबंधों के रिस्क और जोखिमों के प्रति जागरूक होते हैं और सही और सुरक्षित निर्णय लेने में सक्षम होते हैं।

किशोरो मे यौन शिक्षा जागरुकता हेतु सुझाव

विद्यार्थियों में यौन जागरूकता का पता लगाना हेतु स्वनिर्मित यौन शिक्षा जागरूकता मापनी को उपयोग किया गया है इस मापनी से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर कुछ विद्यार्थियों को सुझाव दिये जा सकते हैं।

1. अभिभावक अपने बालकों के लिये परिवार को अधिक समय प्रदान करें तथा शिक्षक अपने छात्र–छात्राओं को पर्याप्त समय प्रदान करें।
2. विद्यार्थियों में यौन शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए उपयुक्त शिक्षण विधियों की खोज की आवश्यकता है।
3. यौन शिक्षा की समस्याओं से छुटकारा पाने के लिए विद्यार्थियों का ऐसा माहौल होना चाहिए। जिसमें वह शिक्षकों से तथा अपने परिवारजन से आसानी से बात कर सके।
4. यौन शिक्षा की विषय वस्तु को इस प्रकार तैयार करना चाहिए जिससे विद्यार्थियों को यौन शिक्षा के बारे में आसानी से समझ में आ जाये।
5. विद्यालय स्तर पर यौन शिक्षा दी जाए जिससे बच्चों में जागरूकता का विकास हो सके और बच्चे मानसिक तनाव से भी दूर रह सकें।

निष्कर्ष

यौन शिक्षा छात्रों के यौन स्वास्थ्य और यौन जीवन को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह छात्रों को सही और विवेकपूर्ण जानकारी प्रदान करती है, जो उनके यौन संबंधों के प्रति सजगता और सही निर्णय लेने की क्षमता को बढ़ावा देती है। इसके प्रभाव से छात्र स्वस्थ यौन जीवन का आनंद उठा सकते हैं और समाज में

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Birsinghpur
Samastipur

सामाजिक सुधार की प्रक्रिया में भी मदद करते हैं। सही यौन शिक्षा से छात्र सजग, साक्षर और सामाजिक जागरूक नागरिक बनते हैं, जो स्वस्थ समाज की नींव को मजबूती से देते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. दत्ता, आर.एस. स्कूलों में यौन शिक्षा देने के प्रति शिक्षकों का रवैया। अप्रकाशित पीएच.डी.थीसिस, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय। एम.बी. में बुच (एड ।), शिक्षा में अनुसंधान का तीसरा सर्वेक्षण। नई दिल्लीरू एनसीईआरटी। (2015)।
2. उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के सेक्स के प्रति समायोजन, विक्षिप्तता और परिप्रेक्ष्य पर यौन शिक्षा पर स्व–उपकरण सामग्री के प्रभाव पर वछरजनी अध्ययन। जर्नल ऑफ द नेशनल एकेडमी ऑफ साइकोलॉजी, इंडिया। (2015)।
3. जॉर्ज, के.वी. केरल के कॉलेजों में किशोरों की सेक्स संबंधी समस्याओं की पहचान, और यौन शिक्षा की उनकी धारणा। अप्रकाशित पीएच.डी कार्य, केरल विश्वविद्यालय। (2015)।
4. मूर्ति, अविवाहित ग्रामीण किशोरियों के बीच सेक्स और प्रजनन की एम.एस.आर अवधारणा। अप्रकाशित पीएचडी थीसिस, श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय। एम.बी. में बुच (एड), शिक्षा में अनुसंधान का पांचवां सर्वेक्षण। नई दिल्लीरू एनसीईआरटी। (2015)।
5. भसीन, एस.के. और अग्रवाल, ओपी राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली में शिक्षा के संबंध में शिक्षकों की धारणा। बाल रोग विशेषज्ञ का इंडियन जर्नल। 66 (4)रू 527–31। (2015)।
6. शेट्टी, पी. और कोवली, एस. गैर–विद्यालय जाने वाले किशोरों के लिए पारिवारिक जीवन शिक्षारू शहरी स्लम में एक प्रयोग। परिवार कल्याण पत्रिका वॉल्यूमरू 47, संख्यारू 2, (2015)।
7. महाजन, पी., और शर्मा, एन. माता–पिता अपनी किशोरियों को यौन शिक्षा के प्रति परिप्रेक्ष्य रखते हैं। गृह विज्ञान विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू। (2015)।
8. कुमार, जे। विश्वविद्यालय के छात्रों के बीच यौन शिक्षा के लिए मूल्यांकन की आवश्यकता– एक पायलट अध्ययन। पब्लिक हेल्थ एंड मेडिसिन का ग्लोबल जर्नल, वॉल्यूम 1 (2) 23–29। (2015)।
9. मैकमैनस, ए. और धर, एल. एसटीआई / एचआईवी, सुरक्षित सेक्स और यौन शिक्षा के प्रति किशोर लड़कियों के ज्ञान, धारणा और परिप्रेक्ष्य का अध्ययनरू (दक्षिणी दिल्ली, भारत में शहरी किशोर स्कूली लड़कियों का एक पार अनुभागीय सर्वेक्षण)। बीएमसी महिला स्वास्थ्य, 8रू12। (2015)।
10. अनिंदिता, ए. और सभरवाल, ई. दिल्ली में किशोरों के बीच यौन शिक्षा के प्रति परिप्रेक्ष्य। (2015)।
11. अंगदी, जी.आर. किशोरों के बच्चों का यौन शिक्षा के प्रति माता–पिता का रवैया। इंटरनेशनल रेफरेड रिसर्च जर्नल, वॉल्यूमरू पप, अंकरू 25. (2015)।
12. बेंज़केन, टी., पालेप, ए.एच. और गिल, पी.एस. मुंबई में किशोर छात्रों के बीच यौन शिक्षा के प्रति एक्सपोजर और रायरू एक क्रॉस–अनुभागीय सर्वेक्षण। बीसीएम पब्लिक हेल्थ, 11रू805। (2015)।
13. नायर, एम.के., लीना, एमएल, पॉल, एम.के., पिल्लै, एच.वी., बाबू, जी., रसेल, पी.एस. और थंकाची, वाई। किशोर प्रजनन और यौन स्वास्थ्य शिक्षा के प्रति माता–पिता और शिक्षकों का परिप्रेक्ष्य। बाल रोग के भारतीय जर्नल; (2015)।
14. वशिष्ठ, के.सी. और राजश्री। यौन शिक्षा के प्रति परिप्रेक्ष्य पर एक अध्ययन जैसा कि माता–पिता और शिक्षकों द्वारा माना जाता है। संवाद – ई जर्नल वॉल्यूमरू 1 नंबररू 2 से लिया गया। (2015)

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Birsinghpur
Jhahuri, Samastipur

CCE – New Learning Strategy-Issues and Challenges

Mr. Chandra Bhushan Mishra (Asst. Prof.)
St. Paul Teachers' TrainingCollege Birsinghpur

INTRODUCTION

Life today has become so complex that examinations have come to play an important part in one's educational career. Examinations are considered so important that most students are afraid of them. They absorb knowledge unconsciously. Further, because of examinations, teachers' have to confine themselves to the syllabus which is aimed at imparting knowledge in systematic manner and thus. Examinations are therefore an important part of academic studies. The present examination system in India is pre-dominantly focusing on the intellectual skills mainly and the parents and the society further supporting it. This done by the teachers according to the schedule developed by the school and guidelines given by the Boards, Though this evaluation has been done at school level all long, certain shortcomings have crept into this system. These shortcomings can be attributed to various factors. The basic factor is the misconception of teachers regarding the place of evaluation and its importance in the educational.

NEED FOR CCE

The need for continuous and comprehensive School-based evaluation has been reiterated over the last few decades. The student should receive a certificate from the school also giving the record of his internal assessment as contained in his cumulative record.

CCE is intended to provide a holistic profile of the learner through assessment of both scholastic and non-scholastic aspects of education spread over the total span of instructional time in schools. As it is spread over a period of two years in classes IX and X it provides several opportunities for the school to identity the latent talent of the learners in different contexts.

St. Paul Teachers' Training College
Birsinghpur
Jhahuri, Samastipur

CHALLENGES OF CCE

Continuous and Comprehensive evaluation is an education system introduced by Central Board of Secondary Education in India. This is believed to help reduce the pressure on the child during examinations as the student will have to sit for multiple tests throughout the year, of which no test or they syllabus covered will be repeated at the end of the year,

CCE pattern requires the teachers to spend more time evaluating individual students. The teachers get around 35 to 409 minutes for a class and it is insufficient to meet the requirements of CCE.

Hence, teachers face more than the above mentioned problems in the continuous comprehensive evaluation system but the teachers have to get over all the above problems and get systematic solution to its because it's not a system followed by school or college only but is run by whole education system.

PRESENT STATUS OF CCE IN BIHAR

It is a well-known fact that education to children occupies top priority in the governance of any country or state. Conductive atmosphere is to be created by the government so that teachers work up to their full potential and students learn things easily.

They convert the examinations into simple handwriting practice tasks Some schools are giving the question papers and asking children to write all the answers at home with the help of guides or study material supplied by the schools. Recently corporate schools leaked even the SA-1 papers in advance.

To reduce exam stress, the Bihar State Council of Education, Research and Training (SCERT) has done away with one of the three Summative Assessment exams that form part of the CCE System.

CONCLUSION

Schools need to be placed where students do things and adults react to what they do. In assessing students, schools need to focus on

PRINCIPAL
St Paul Teacher's Training College
Birsinghpur
Jhakuri, Samastipur

rigor, ability to take risks. CCE must do more than establish whether students can reproduce what they have been taught; the teachers must be more than delivers of curriculum content and judges of student success.

REFERENCES

- The Indian Journal of Educational Assessment, vol.1 No. 2, 2022
- Teacher, vol. 5 No. 4, 2011
- Education World. February 2012
- Article, Hans India

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Birsinghpur
Jhanjharpur, Samastipur

Phubbing Behaviour

Arpana kumara,Asst. Professor (SPTTCB)

Abstract - Along with making life easier, Smartphone's have also eliminated many problems. Especially by solving the problem of human communication, communication was made simple, accessible and convenient for all. Humans can communicate from any corner of the country or world sitting at home.

But it faces challenges to human face-to-face communication. A common behavior encountered during social interactions is using a Smartphone simultaneously while having a conversation, which psychologists refer to as phubbing . The practice of phubbing has become an emerging phenomenon of worldwide interest to researchers. The cause is due to the fact that smartphones are ubiquitous and are often used in co-present interactions. This behavior is generally considered inappropriate and is called "phubbing". Mobile phone use and Internet addiction, gaming addiction in young adults exhibit phubbing behavior. Through this study, we will discuss the causes, effects and remedies for phubbing behavior.

Keywords: phubbing, mobile addiction, internet addiction, game addiction, fear of missing out.

Introduction - The progress of information and communication technology in digital era has resulted in various changes in society, especially social change like human behavior , dress up, communication style , medium of communication , and living style so on . Social change is a change in patterns or forms of interaction in social relationships . This was marked by the emergence of various types of media and communication devices called Smartphone to facilitate and speed up access to messages and information and also using different social sites for communication , acquiring knowledge and entertainment like Facebook , You Tube , Twitter , TikTok, Sina Weibo ,Telegram , Snapchat , Kuaishou , Reddit ,Linkedln , Instagram, Pinterest , etc. Smartphone have multiple benefits, giving easy access to communication and allowing people to connect with friends and family throughout the day and anywhere . Also, Smartphone's can provide various information , entertainment and different types of online games .The increasing number of Smartphone users at this time presents benefits and adverse effects in its use. But when people talk to someone and don't give attention properly to use smart phone is called **Phubbing** . The word " Phubbing " comes from two words: **"phone" and "snubbing ."** This means seeing someone's cell phone during a real conversation with someone else. Phubbing

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Birsinghpur
Jhahuri, Samastipur

ISSN NO:2347-6648

can be described as an individual looking at his or her mobile phone during a conversation with other individuals, dealing with the mobile phone and escaping from interpersonal communication".

Phubber is a term for individuals who do phubbing . Phubber will often see Smartphone's only to check it on average 221 times per day , even when it doesn't vibrate or ringing, they keep checking the Smartphone , and 70% -80% of the people who drive uses a Smartphone while on the road . Even worse conditions are when interested people or a family gathering in a room to do certain activities, such as dinner or study in class, but do not pay attention to or do not communicate with each other and focus on Smartphone . Such conditions are not in accordance with the culture of mutual respect or ethics in communication that has existed since the community recognized social values in life .

Cause of Phubbing Behaviour –

The main cause of phubbing behaviour is increasing interest towards technology that showed how much people affected from electronic device like Smartphone , Laptop , Television etc.

- The new generation show their personality , status by using excess Smartphone and followers on social sites that is also a cause of Phubbing Behaviour .
- Mostly Parents are doing job private or government sector so they have lack of time to care their child by which they give smart phone to play game and talking to them .it is also a cause of creating Phubbing behaviour where child are more connected with Smartphone then his grandfather or grandmother .
- Phubbing is a constant Smartphone usage and causes a lack of human interaction or an attitude of hurting the other person by using an excessive Smartphone .
- Phubbing is a culture that arises because of the uncontrolled effects of modernization. Modern society prefers to do various activities on their own by using a variety of technologies so that they become individualistic and do not care about social conditions .
- Another thing that explains regarding Phubbing is when individuals see their phones during conversations with other people , dealing with phones and escaping interpersonal communication cause of avoid someone .

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College

- Most of the time people are used to access cyberspace and are used to making friends through social media and they have a lack of skills to socialize directly because all the information needed can be from gadgets so that they generally tend to be individualistic.

Impact of Phubbing Behaviour –Phubbing in life have an impact . Chotpitayasunondh and Douglas showed the effects of phubbing, namely –

(1) neglect of direct interaction,(2) the existence of a cycle phubbing advanced from phubee to phubber with phubbing more violent (3) decreasing the quality and satisfaction of interactions, decreasing trust in the interlocutor, (4) Stretching relationships with communication partners,

(5) jealousy, (6) influencing mood one's,

(7) Creating a situation of social exclusion. The conditions of social exclusion in phubbing show that a person's social relationship is not what they want, so there is a feeling of despair and helplessness. In a romantic relationship with this attitude, neglect pair can reduce the quality of relationship satisfaction that will lead to conflict (8) Another impact of this phubbing is that people become more apathetic towards their environment, inhibit the process of interpersonal communication, influence social interaction inhibit the emotional bond of individuals because of jealousy, feelings of neglect, anger, sadness etc .

Remedies of Phubbing behaviour –

- Put the phone away or turn your phone to the " do not disturb " in specific time like eating , worship ,yoga or exercise , and sleeping time
- Try to give your self and engage with the people in front of you and have a sincere conversation .
- Challenge to yourself to avoid your phone and don't try to see phone time to time .
- Personal counseling help to stop phubbing and give such a example of role model .
- When u feel loneliness try to spent time with family, friend or do whatever you like to do.
- Try to stop net surfing without essential work and encourage face to face communication and social interaction etc.

Conclusion –

Phubbing arises due to the excessive use of Smartphone and accessing information through social media regardless of the circumstances. Lack of individual interaction with other individuals in real social situations can eliminate the ability to build relationships and

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Birsinghpur
Jhehuri, Samastipur

communicate well. The result of phubbing behaviour is low achievement, disruption of concentration, loss of interpersonal communication, loss of social interaction, and social closure. Based on the explanation above, it is necessary to provide guidance and counseling services to overcome the behavioural phubbing that is being experienced by many people. The need of guidance and counseling services can be implemented in the form of guidance and counseling modules that focus on "use Smartphone smartly."

References –

Aagaard, 2019J. Aagaard
Digital akrasia: a qualitative study of phubbing
AI Soc. (2019), pp. 237-244

Abeele et al., 2016 , M.M.V. Abeele, M.L. Antheunis, A.P. Schouten
The effect of mobile messaging during a conversation on impression formation and interaction quality
Comput. Hum. Behav., 62 (2016), pp. 562-569
Blanca and Bendayan, 2018

Spanish version of the Phubbing Scale: Internet addiction, Facebook intrusion, and fear of missing out as correlates
Psicothema, 30 (4) (2018), pp. 449-454

Cameron and Webster, 2011
Relational outcomes of multicommunicating: Integrating incivility and social exchange perspectives
Organ. Sci., 22 (2011), pp. 754-771

PRINCIPAL
St Paul Teachers' Training College
Birsinghpur
Jhahuri, Samastipur

शिक्षा के विकास में गैर–सरकारी शिक्षण संस्थानों का योगदान

सुरेन्द्र प्रसाद चौधरी ,सहायक प्राध्यापक, संत पॉल टी.टी.कॉलेज,रामरतीपुर।

शिक्षा प्रत्येक देश के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक विकास की कुंजी है। शिक्षा प्रत्येक समाज की जरूरत है, प्रत्येक राष्ट्र की उन्नति एवं विकास का एक आवश्यक साधन है। शिक्षा के द्वारा ही समाज अपनी भावी पीढ़ी को उच्च आदर्श, ज्ञान, संस्कृति, विश्वास तथा परम्पराओं को हस्तांतरित करता है। अकसर यह देखा गया है कि जिस देश में साक्षरता की दर जितनी कम होती है, वह देश सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक रूप से उतना ही पिछड़ा हुआ होता है, वहाँ के नागरिक भी गरीबी और बेरोजगारी से पीड़ित होते हैं। इसके विपरीत, जिन देशों में साक्षरता की दर जितनी अधिक होती है, वे देश सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक रूप से संपन्न होते हैं, वहाँ के नागरिकों का जीवन स्तर भीउच्च कोटि का होता है।

शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति का अधिकार है, प्रत्येक राष्ट्र की जरूरत है। कोई भी राष्ट्र अपने नागरिकों को शिक्षित किए बिना विकास पथ पर अग्रसर नहीं हो सकता है। शिक्षा के इसी महत्व को ध्यान में रखते हुए सरकार ने शिक्षा को मौलिक अधिकार घोषित किया है। मध्याह्न भोजन जैसी योजनाओं ने बच्चों को विद्यालयों की ओर आकर्षित किया है, जिससे प्रत्येक बालक को शिक्षा प्रदान की जा सके। परंतु, सरकार के इन प्रयासों के बाद भी बहुत–से बच्चे शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाते। कुछ बच्चों के पास पढ़ाई के साधन नहीं होते तो कुछबच्चे गरीबी से मजबूर होकर पढ़ाई छोड़कर किसी–न–किसी काम–धंधे में लग जाते हैं। शिक्षा का प्रचार–प्रसार करना सरकार का कर्तव्य है, पर देश की 130 करोड़ की आबादी का बोझ सरकार पर भारी पड़ता है। ऐसे में नागरिक पहल महत्वपूर्ण हो जाती है। नागरिकों की पहल का ही परिणाम ये गैर–सरकारी संस्थान हैं, जो स्वयं के प्रयासों द्वारा सामाजिक शिक्षा के क्षेत्र में एक आशा की किरण बनकर उभरे हैं। भारत में गैर–सरकारी संगठनों का नीति–वाक्य, सभी बच्चों को निःशुल्क शिक्षा देना और गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले लोगों के जीवन स्तर में सुधार लाना है। गैर–सरकारी संस्थान नवीनता और प्रयोगात्मक विधि के जरिए ही उन क्षेत्रों तक अपने कार्यों को पहुँचा रहे हैं, जहाँ सरकारी सेवाएँ पूर्ण रूप से नहीं पहुँच पा रही हैं।

शोध की दृष्टि से इस अध्ययन की आवश्यकता मुख्य रूप से हमारी सरकार और समाज के साथ–साथ उन सभी लोगों के लिए भी है जो अपने व्यक्तिगत या सामूहिक प्रयासों द्वारा सामाजिक विकास की प्रक्रिया में अपना महत्वपूर्ण योगदान देना चाहते हैं। वर्तमान समय में ये गैर–सरकारी संस्थान पर्यावरण, स्वास्थ्य, बाल–श्रम उन्मूलन, शिक्षा, महिलाओं और बच्चों के अधिकारों का संरक्षण, उपभोक्ता संरक्षण, आपदा प्रबंधन आदि विभिन्न क्षेत्रों के साथ–साथ शिक्षा के क्षेत्र में भी बहुत ही सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। गैर–सरकारी संस्थानों की इन गतिविधियों से करोड़ों भारतवासियों को लाभ हो रहा है, लेकिन बिना किसी लाभ के उद्देश्य से काम करने वाले इन संस्थानों के प्रति लोगों में पर्याप्त चेतना का अभाव है। आज भारत में सामाजिक सरोकारों और जरूरतों के प्रति गैर–सरकारी संस्थानों के सकारात्मक दृष्टिकोण को देखते हुए, इन संस्थानों पर व्यापक शोध होने की जरूरत भी है।

'भारतीय उद्योग परिसंघ (सी.आई.आई.) रिपोर्ट, 2013 के अनुसार, 'देश को विकास पथ पर आगे बढ़ाने के लिए सरकार व्यक्तिगत पहल की आवश्यकता महसूस कर रही है।' लोगों के जीवन स्तर में सुधार की आवश्यकता को देखते हुए और लोगों में साक्षरता की दर को बढ़ाने के लिए गैर–सरकारी संस्थान विभिन्न परियोजनाओं पर काम कर रहे हैं। इससे लोगों के जीवन स्तर को सुधारने में बहुत मदद मिल रही है। गैर–सरकारी संस्थान किसी भी क्षेत्र के विकास में बेहतर मदद कर सकते हैं, क्योंकि वे स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप अपनी कार्यप्रणाली में लचीलापन ला सकते हैं और इस प्रकार विकास की एकीकृत परियोजनाएँ अपना सकते हैं। लोगों के साथ सीधा संपर्क होने के कारण वे स्थानीय लोगों की, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में अच्छी मदद कर सकते हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 में भी सरकार ने शिक्षा के प्रबंधन एवं शिक्षा के विकास के लिए गैर–सरकारी संस्थानों के जुड़ाव एवं उनके सहयोग की बात की है। इसमें कहा गया है कि शिक्षा का प्रबंध करना सरकार का कर्तव्य है, लेकिन देश की बढ़ती आबादी और सीमित संसाधनों को देखते हुए इसमें नागरिकों की पहल भी बहुत महत्वपूर्ण है। इसमें कहा गया है कि गैर–सरकारी संस्थानों के जुड़ाव एवं लोगों के स्वयं के प्रयासोंद्वारा ही शिक्षा–दर में वृद्धि की जा सकती है और देश के कोने–कोने में सबको शिक्षा प्रदान की जा सकती है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

• विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास के लिए गैर–सरकारी संस्थानों द्वारा किए जा रहे प्रयासों का अध्ययन करना।यह पता लगाना कि इन गैर–सरकारी संस्थानों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याएँ किस सीमा तक दूर हो रही हैं।

• बच्चों के शैक्षिक विकास के लिए गैर–सरकारी संस्थानों द्वारा अपनाई जा रही पाठ्यचर्या और प्रयोग की जा रही अनुदेशात्मक सामग्री का पता लगाना।

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Birsinghpur
Jhahuri, Samastipur

शोध विधि

यह शोध 'विवरणात्मक सर्वेक्षण विधि' पर आधारित था। विवरणात्मक अनुसंधान वर्तमान से संबंधित होता है और अनुसंधान के अंतर्गत घटना के स्तर को निर्धारित करता है।

न्यादर्श

इस अध्ययन में न्यादर्श के रूप में समस्तीपुर जिला के एक गैर–सरकारी संस्थान आद f विद्यानिकेतन शिक्षण संस्थान' में पढ़ने वाले 50 विद्यार्थियों और वहाँ के 10 शिक्षकों का चयन किया गया था।उपकरणइस शोध में शोधक द्वारा आँकड़ों का संकलन अवलोकन, प्रश्नावली और साक्षात्कार विधियों द्वाराकिया गया है। आँकड़ों को एकत्रित करने के लिए एक ना गैर–सरकारी संस्थान में पढ़ने वाले 50 विद्यार्थियों और वहाँ पढ़ाने वाले 10 शिक्षकों को लिया गया। यह शोध प्रक्रिया मात्रात्मक एवं गुणात्मक है। इसमें आँकड़ों को एकत्र करने के पश्चात् सांख्यिकीय प्रविधियों द्वारा आँकड़ों का विश्लेषण किया गया।

शोध अध्ययन की सीमाएँ

शोध में समस्तीपुर जिला के एक क्षेत्र से केवल – एक गैर–सरकारी संस्थान को लिया गया। यह गैर–सरकारी संस्थान शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत है।

आद f विद्यानिकेतन शिक्षण संस्थान' की पृष्ठभूमि

"आद f विद्या निकेतन शिक्षण संस्थान' एक गैर–सरकारी संस्थान है, जो शिक्षा के द्वारा सामाजिक विकास की प्रक्रिया में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। वर्ष 2000 में बुद्धिजीवी व्यक्तियों के एक समूह ने अपने आस–पास के क्षेत्रों में निर्माणाधीन इमारतों में कार्यरत श्रमिकों के बच्चों के बारे में यह महसूस किया कि अगर इन बच्चों को भी समाज के अन्य बच्चों के समकक्ष लाना है तो इनको भी शिक्षित करने की आवश्यकता है। इस समूह ने समाज के इन गरीब और पिछड़े घरों के बच्चों के लिए शिक्षा 'आद f निकेतन' नामक शिक्षण संस्थान की स्थापना की, जिसमें विस्थापित श्रमिकों, मजदूरों एवं आस–पास के घरों में काम करने वाले श्रमिकों के बच्चे शिक्षा प्राप्त करने के लिए आते थे। वर्ष 2000 में 12 बच्चों के साथ इस शिक्षण संस्थान की स्थापना हुई थी और अब वर्तमान में इस संस्थान के साथ लगभग 500 बच्चे जुड़ चुके हैं, जिनको 'आद f विद्या निकेतन' द्वारा निःशुल्क लेखन–सामग्री, किताब–कॉपी, वर्दी एवं दैनिक पौष्टिक आहार प्रदान किया जाता है। इस संस्थान द्वारा प्रतिवर्ष यहाँ के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को छात्रवृत्तियाँ प्रदान की जाती हैं। इस शिक्षण संस्थान में बच्चों को बुनियादी शिक्षा के अलावा व्यावसायिक प्रशिक्षण, कंप्यूटर शिक्षा, हस्तकला, नृत्य, संगीत, नाटक आदि का प्रशिक्षण भी दिया जाता है।

व्याख्या एवं विश्लेषण

यह शोध मुख्य रूप से ' आद f विद्या निकेतन शिक्षण संस्थान' की रूपरेखा, यहाँ की कार्य पद्धति तथा प्राप्त सूचनाओं की व्याख्या और विश्लेषण पर आधारित है। शोधक ने आद f विद्या निकेतन शिक्षण संस्थान' (एक गैर–सरकारी संस्थान) में पढ़ने वाले बच्चों, उनके अभिभावकों तथा वहाँ पढ़ाने वाले शिक्षकों से अवलोकन, साक्षात्कार और प्रश्नावली विधियों द्वारा आँकड़े एकत्रित किए। एकत्रित आँकड़ों का विश्लेषण कर इस संस्थान के विषय में तथ्यों, विचारों और अनुभवों को प्रस्तुत किया गया है।

तालिका 1 के अनुसार शोधक द्वारा 'आद f विद्या निकेतन' में पढ़ने वाले बच्चों से पूछा गया कि क्या 'आद f विद्या निकेतन' में आना आपके लिए लाभदायक सिद्ध हुआ है? तब ज्यादातर बच्चों का जवाब "हाँ" में था। यहाँ पढ़ने वाले लगभग 75 प्रतिशत विद्यार्थियों का यह मत था कि यहाँ आने से हमें हमारे भविष्य के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायता मिल रही है। 80 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बताया कि यहाँ आने से उनकी निर्णय निर्माण क्षमता का विकास हुआ है, जबकि 30 प्रतिशत विद्यार्थियों का मत था कि यहाँ पढ़ने से उनको दूसरे विद्यालयों में दाखिला लेने में मदद मिली है। वहीं 65 प्रतिशत विद्यार्थियों का मत था कि यहाँ आने से हमारे आत्मविश्वास में वृद्धि हुई है।

तालिका 1– संस्थान में आने से बच्चों को मिलने वाला लाग

1.	भविश्य के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायता मिली	75%
2.	निर्णय निर्माण क्षमता का विकास हुआ	80 %
3.	विद्यालय में दाखिला लेने मे मदद मिली	30 %
4.	आत्मवि वास में वृद्धि हुई	65 %
5.	कोई अन्य	0 %

PRINCIPAL
St Paul Teachers' Training College
Birsinghpur
Jhahuri, Samastipur